डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 29 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >> शुक्रवार, 21 जनवरी, 2022

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

hillviewsamachar@gmail.com

12 से 14 साल के बच्चों को जल्द मिलेगा कोरोना कवच

एजेंसी

नई दिल्ली। देश में अब 12-14 साल के बच्चों को भी कोरोना के खिलाफ वैक्सीन लगाई जाएगी। मार्च से इन बच्चों को वैक्सीन लगेगी। फिलहाल देश में कोरोना की तीसरी लहर थमने का नाम नहीं ले रही है। बीते 24 घंटे में 2 लाख 58 हजार 89 नए कोरोना संक्रमित मिले हैं। देश में अब तक 15-17 साल के 3.31 करोड़ बच्चों को वैक्सीन की पहली डोज लग चुकी है। केवल 13 दिनों में ही 45त्न बच्चे पहली डोज के साथ वैक्सीनेटेड हैं। 15-17 साल के बच्चों का वैक्सीनेशन अभियान 3 जनवरी 2022 से शुरू हुआ था। इन्हें कोवैक्सिन लगाई जा रही है।

मार्च की शुरुआत से लगेगी वैक्सीन

जनवरी के अंत तक 15-17 साल के 7.4 करोड़ बच्चों को कोरोना वैक्सीन की पहली डोज लग जाएगी। इसके बाद फरवरी की शुरुआत से इन बच्चों को दूसरी डोज देना शुरू कर दिया जाएगा। महीने के अंत तक इन सबको वैक्सीन की दूसरी डोज लग जाएगी। इसके बाद 12-14 साल के बच्चों को फरवरी के आखिर से या फिर मार्च की शुरुआत से वैक्सीन देना शुरू कर सकते हैं। 12-17 साल की उम्र के बच्चे काफी हद तक वयस्क की तरह ही होते हैं। इसलिए वैक्सीनेशन की बात की जाए तो ये बच्चे सरकार की प्राथमिकता हैं। टीनएजर्स काफी गतिशील होते हैं। इनका स्कूल और कॉलेजों में एक दूसरे से मिलना-जुलना होता है, जिससे इन्हें कोरोना संक्रमण होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में इन्हें जल्द से जल्द वैक्सीन लगाना बेहद जरूरी है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार को गंभीर बीमारी से पीड़ित 5-14 साल के बच्चों को भी वैक्सीन के दायरे में लाना चाहिए। भारत बायोटेक द्वारा विकसित की गई कोवैक्सिन को भारत सरकार ने 2 से 17 साल के बच्चों के लिए इमरजेंसी में इस्तेमाल करने की मंजूरी दी है। इस वैक्सीन को बच्चों पर किए गए ट्रायल में सुरक्षित पाया गया था। देश में अब तक 157 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन डोज दी जा चुकी हैं। पिछले 24 घंटों में 39 लाख से ज्यादा नए लोगों को वैक्सीन लगाई गई। वहीं देश के 76% लोग दूसरी खुराक के साथ वैक्सीनेटेड हैं।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की संवेदनशीलता से मिला कोविड पीड़ित परिवारों को बड़ा संबल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के संवेदनशील एवं मानवीय निर्णयों से प्रदेश में कोविड महामारी से पीड़ित परिवारों को नया जीवन मिल रहा है। कोविड से अपनों की जान गवाने वाले परिवारों को मुख्यमंत्री की पहल पर सहृदयता पूर्वक संबल प्रदान किया जा रहा है। ऐसे परिवारों को आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संबल प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना, कोरोना वारियर्स सहायता योजना एवं एसडीआरएफ मद से अनुग्रह सहायता जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं राज्य में लागू की गई हैं। इन योजनाओं के माध्यम से हजारों परिवारों को राहत मिली है।

14,817 बच्चों एवं विधवाओं को 103 करोड़ की सहायता

प्रदेश में 25 जून, 2021 से प्रारम्भ हुई मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना में अब तक 103 करोड़ रूपए से अधिक व्यय कर 14 हजार 817 बच्चों एवं विधवा महिलाओं को लाभान्वित किया गया है। योजना के तहत अब तक 182 अनाथ बच्चों को 1 करोड़ 91 लाख रूपए से अधिक, 5 हजार 640 विधवा महिलाओं के बच्चों को करीब 2 करोड़ 95 लाख एवं 8 हजार 995 विधवा महिलाओं को करीब 99 करोड़ रूपए की सहायता प्रदान की गई है। योजना में अनाथ बच्चों को तात्कालिक सहायता के रूप में एकमुश्त 1 लाख रूपए एवं 18 वर्ष की आयु तक 2500 रूपए प्रतिमाह तथा 2000 रूपए वार्षिक सहायता देय है। साथ ही, 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर 5 लाख रूपए की सहायता राशि देय है। इसी प्रकार शैक्षणिक सहायता के अन्तर्गत कक्षा 12 तक निःशुल्क शिक्षा, राजकीय आवासीय विद्यालय एवं छात्रावासों में प्राथमिकता से प्रवेश, कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा के लिए अम्बेडकर डीबीटी वाउचर योजना का लाभ और मुख्यमंत्री युवा संबल योजना में बेरोजगारी भत्ते का लाभ भी प्राथमिकता से देय है। विधवा महिला को 1 लाख रूपए की तात्कालिक सहायता के साथ ही 1500 रूपए प्रतिमाह पेंशन और विधवा के बच्चों को 18 वर्ष की आयु तक 1000 रूपए प्रतिमाह एवं 2000 रूपए वार्षिक देय हैं।

18 कोरोना वारियर्स को 50-50 लाख की सहायता

कोविड की पहली लहर के दौरान ही मुख्यमंत्री ने कोरोना वारियर्स के रूप में काम कर रहे संविदा तथा मानदेय कर्मचारी के संक्रमित होने एवं इलाज के दौरान मृत्यु होने पर उनके परिवारों को 50 लाख रूपए की सहायता प्रदान करने के लिए कोरोना वारियर्स सहायता योजना लागू की थी। इस योजना के तहत अब तक 9 करोड़ रूपए व्यय कर 18 व्यक्तियों को 50-50 लाख रूपए की सहायता उपलब्ध कराई गई है।

8633 परिवारों को 50-50 हजार की अनुग्रह राशि

इसी प्रकार कोविड महामारी के कारण मृत्यु होने पर मृतकों के परिवारों को एसडीआरएफ मद से 50 हजार रूपए की अनुग्रह सहायता दिए जाने का संवेदनशील निर्णय राज्य सरकार ने किया है। निर्णय के अनुरूप अब तक 8 हजार 633 मृतकों के आश्रित परिवारों को 50 हजार रूपए प्रति परिवार के अनुसार 43 करोड़ रूपए से अधिक की राशि का भुगतान किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कोविड महामारी से पीड़ित परिवारों को राहत पहुंचाने की दिशा में पूरी संवेदनशीलता के साथ निर्णय लिए हैं।

जगतगुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय का चौथा दीक्षांत समारोह संपन्न

सनातन ज्ञान की वाहक है संस्कृतः राज्यपाल

राज्यपाल ने संस्कृत भाषा से आमजन को जोड़ने का किया आह्वान

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने संस्कृत भाषा से आम लोगों को जोड़ने के लिए प्रयास करने पर बल दिया है। संस्कृत के पुरातन ग्रंथों का हिन्दी और दूसरी भाषाओं में बड़े स्तर पर अनुवाद आवश्यक है। राज्यपाल जगदुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षांत समारोह के अवसर पर बुधवार को ऑनलाइन संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक विषयों को संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। उन्होंने संस्कृत विश्वविद्यालय को भारतीय जीवन दर्शन से जुड़े मौलिक शोध और अनुसंधान का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने का आह्वान किया। समारोह के मुख्य अतिथि संस्कृत शिक्षा मंत्री डॉ. बीडी कल्ला ने कहा कि संस्कृत भाषा के प्रसार को लेकर राज्य सरकार सतत प्रयत्नशील है। संस्कृत शिक्षा और संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ही प्रदेश में अलग से संस्कृत शिक्षा निदेशालय और संस्कृत अकादमी का संचालन किया जा रहा है। कुलपति डॉ. अनुला मौर्य ने कहा कि विश्वविद्यालय में संविधान पार्क और वैदिक परंपरा के अनुसार नक्षत्र वाटिका एवं नवग्रह वाटिका की स्थापना भी की जा रही है। कुलपति ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शिक्षणेत्तर गतिविधियों एवं विकास कार्यों का प्रगति प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया।

कुलसचिव रंजीता गौतम ने बताया कि दीक्षान्त समारोह में शैक्षणिक सत्र 2019 एवं 2020 के सफल 16851 विद्यार्थियों को डिग्रियां एवं 23 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि तथा सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 31 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। कार्यक्रम में राज्यपाल ने उपस्थित लोगों को भारतीय संविधान में वर्णित मूल कर्तव्यों का वाचन करवाया। विश्वविद्यालय की कार्य परिषद और विद्या परिषद के सदस्यगण, शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन उपस्थित रहे। मंगलाचरण डॉ. शंभु कुमार झा और कार्यक्रम का संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया।

23 साल की उम्र में बनी आइएएस रुक्मणि रियार श्रीगंगानगर कलेक्टर

कार्यालय संवाददाता

श्रीगंगानगर। श्रीगंगानगर की नई जिला कलेक्टर रुक्मणि रियार गुरदासपुर (पंजाब) की रहने वाली हैं। यूपीएससी 2011 की परीक्षा में देशभर में दूसरे स्थान पर रहने वाली रुक्मणि के पिता बलजिंदर सिंह रियार होशियारपुर के डिप्टी डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी रह चुके हैं, जबकि इनकी माता गृहिणी हैं। रुक्मणि ने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अमृतसर के गुरुनानक देव विश्वविद्यालय से सोशल साइंस में बैचलर डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज में सोशल एंटरप्रेन्योरशिप में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। पोस्ट ग्रेजुएशन में उन्हें गोल्ड मेडल मिला। आइएएस रुक्मणि मैसूर और मुंबई के एनजीओ में भी काम कर चुकी हैं।

साल 2011 में रुक्मणि ने पहली बार यूपीएससी की परीक्षा दी थी और पहले ही प्रयास में न केवल उन्होंने यह परीक्षा पास की बल्कि दूसरी रैंक भी हासिल कर ली। उनका वैकल्पिक विषय पॉलिटिकल साइंस और सोशियोलॉजी था। इस परीक्षा के लिए किसी भी कोचिंग का सहारा नहीं लिया था। रुक्मणि यूपीएससी परीक्षा की तैयारी के लिए कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की एनसीइआरटी की पुस्तकें पढ़ने की सलाह देती हैं और यूपीएससी के इंटरव्यू के लिए न्यूज पेपर अच्छी तरह पढ़ने पर जोर देती हैं। जिला कलक्टर जाकिर हुसैन अपने तबादले पर बोले कि बैक टू पैवेलियन। वे अब वापस जयपुर जा रहे हैं। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिला कलेक्टर के दौरान सिंचाई पानी की समस्या को नजदीक से देखा।

कोरोना सैम्पल रिपोर्ट अब जल्द मिलेगीः जिला कलक्टर

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। जयपुर जिला कलक्टर राजन विशाल ने बुधवार को सवाई मानसिंह आयुर्विज्ञान महाविद्यालय में चिकित्सकों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक कर कोरोना सैम्पल रिपोर्ट में विभिन्न स्तरों पर आ रहे व्यवधानों को दूर किया। उन्होंने कहा कि आरटीपीसीआर की रिपोर्ट अब 72 घंटे के बजाय 24 घंटे में मिल सकेगी।

विशाल ने सवाई मानसिंह चिकित्सालय और आरयूएचएस चिकित्सालय के चिकित्सकों से चर्चा कर सैम्पल रिपोटिंग के संबंध में आ रही विभिन्न कठिनाईयों का निराकरण किया। उन्होंने पोर्टल में रूकावट, कम्प्यूटर ऑपरेटर की कमी और चिकित्सालय के लैब तक सैम्पल पहुँचने में आ रही विभिन्न स्तरों की बाधाओं को दूर किया। जिला कलक्टर ने सूचना प्रौद्योगिकी के अधिकारियों से भी पोर्टल हैंग होने और उसके कम गति से चलने से आ रही समस्याओं को तुरन्त दूर करने के निर्देश दिये।

विशाल ने बताया कि दोनों चिकित्सालयों की लैब में प्रतिदिन 24 घंटे जांच कार्य चल रहा है। उन्होंने सैम्पल रिपोटिंग में चिकित्सकों को आपसी समन्वय से कार्य करने की आवश्यकता बताई ताकि जांच की रिपोर्ट जल्दी मिल सके। विशाल ने जयपुर के दोनों मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को भी निर्देश दिये कि आरटीपीसीआर सैम्पल जैसे-जैसे एकत्रित होते जाये उन्हें उसी प्रकार संबंधित चिकित्सालयों के लैब में शीघ्र दो से तीन राउण्ड में पहुँचाये। इससे जांच कार्य लगातार तीव्र गति से चलेगा। जांच रिपोर्ट शीघ्र आयेगी। मरीजों का ईलाज जल्दी आरम्भ होने से कोरोना का संक्रमण रूक सकेगा। बैठक में दोनों चिकित्सालयों के चिकित्सक, जांच प्रयोगशाला के चिकित्सकों सहित शहर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी मौजूद थे।

28 जनवरी के अंक में **गणतंत्र दिवस** एवं **शहीद दिवस** के महान दिवसों पर **हिलव्यू समाचार** लेकर आ रहा है बहुरंगी विशेष अंक। आप भी अपनी रचनाएँ इस विषय पर भेज सकते हैं, विज्ञापन दे सकतें हैं।
अपना फ़ोटो, शहर का नाम, रचना वाट्सएप करें -9460079061
अंतिम तिथि : रचनाएँ 26 जनवरी 2022 एवं विज्ञापन 27 जनवरी तक।

कुसुम ए योजना की अवधि 28 फरवरी तक बढ़ाई

बिना कोलेटरल सिक्योरिटी के बैंकों से मिलेगा ऋणः ऊर्जामंत्री

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। ऊर्जामंत्री भंवर सिंह भाटी ने बताया कि किसानों के हित में बड़ा फैसला करते हुए कुसुम ए योजना की अवधि 28 फरवरी तक बढ़ा दी गई है। उन्होंने बताया कि अब कुसुम ए योजना में पहले से पंजीकृत सोलर प्लांट लगाने वाले किसान 28 फरवरी तकऊर्जा विकास निगमसे पॉवर परचेज एग्रीमेंट कर सकेंगे, वहीं प्रोजेक्ट सिक्योरिटी राशि भी 28 फरवरी तक जमा करा सकेंगे।

ऊर्जा मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत बंजर व अनउपजाऊ भूमि पर कुसुम योजना में सोलर प्लांट लगाने की इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर काफी गंभीर हैं। उन्होंने कुसुम ए योजना में राजस्थान के अव्वल प्रदेश होने के बावजूद योजना के क्रियान्वयन में तेजी लाने और क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री श्री गहलोत किसानों को इस योजना में आसानी से वित्त पोषण के लिए केन्द्र सरकार से भी आग्रह कर चुके हैं।

भाटी ने बताया कि मुख्यमंत्री के निर्देश और प्रदेश के किसानों के हित में पहल करते हुए एसीएस ऊर्जा डॉ सुबोध अग्रवाल द्वारा पिछले दिनों सीधे बैंकों से संवाद कायम करते हुए बैंकों से बिना कोलेटरल सिक्योरिटी के ऋण देने पर सहमति व्यक्त करा दी है। उन्होंने बताया कि बैंकों से ऋण सुविधा उपलब्ध होने से योजना के पंख लगेंगे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बतया है कि कुसुम ए योजना के क्रियान्वयन के लिए राज्य में राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम नोडल संस्था है। योजना में अब तक 13 परियोजनाओं में 14 मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता के संयत्र स्थापित किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि कुसुम योजना के कंपोनेंट ए के तहत बंजर व बेकार भूमि पर आधा किलोवाट से 2 मेगावाट तक के सोलर प्लांट लगाने के लिए बैंकों से बिना कोलेटरल सिक्योरिटी के ऋण देने पर सहमति के बाद योजना की अवधि बढ़ाने की मांग की जाती रही है। उन्होंने बताया कि किसानों, बैंकर्स और डिस्काम्स की मांग को देखते हुए कुसुम ए योजना की अवधि 28 फरवरी तक बढ़ाने के आदेश जारी कर दिए गए है। उन्होंने बताया कि वितरण निगमों द्वारा बिजली बिल के सात दिन में भुगतान, लेटर ऑफ क्रेडिट व एस्क्रो अकाउंट जैसे निर्णयों से बैंकों और किसानों में विश्वास बढ़ा है।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> शुक्रवार, 21 जनवरी, 2022

संपादकीय

बजट में कोरोना से निपटने की तैयारियों के साथ-साथ कोरोना से हुए नुकसान से लोगों को उबारने का करें उपाय!

वित्त मंत्री निर्मला सीतारामण द्वारा केंद्रीय बजट पेश करने में अब कुछ सप्ताह बचे हैं। इस वक्त अर्थव्यवस्था की दशा कुछ मिलीजुली-सी है। जहां सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में एक उछाल आया है, वहीं निजी उपभोग का हिस्सा पूर्व कोविड-19 महामारी की तुलना में अभी भी तीन प्रतिशत कम है। इसी तरह उपभोक्ता विश्वास सूचकांक में बेहतरी के बावजूद उपभोक्ताओं का भरोसा डांवाडोल है। वर्ष 2020 में आई इस महामारी की पहली लहर की चपेट में ध्वस्त हो गए रोजगार और नतीजतन फैल गई गरीबी और कर्ज से हम पूरी तरह निकल भी नहीं पाए थे कि दूसरी लहर की विभीषिका ने 2021 में अमूमन सब कुछ मटियामेट कर दिया। पहली लहर में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग अधिक प्रभावित हुआ था। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि आम बजट में न केवल महामारी की तीसरी लहर से निपटने की सारी तैयारियों, बल्कि इसकी पहली दो लहरों की आर्थिक मार का जायजा लेकर उसके निदान के सभी संभव उपायों को प्राथमिकता दी जाए।

भारत में कोविड-19 महामारी की दो लहरों के बीच लगभग नौ महीनों (जून 2020 से फरवरी 2021) का अंतराल था। पहली लहर में फरवरी से अप्रैल 2020 के बीच मासिक औसतन प्रति-व्यक्ति पारिवारिक आमदनी में 44 प्रतिशत की गिरावट आई। हालांकि अप्रैल और मई 2020 की सख्त तालाबंदी के बाद जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था वापस पटरी पर आने लगी, वैसे-वैसे आमदनी में भी बढ़ोतरी होती गई। जनवरी 2021 तक औसतन मासिक पारिवारिक आमदनी फरवरी 2020 की तुलना में महज तीन प्रतिशत कम रह गई थी। दुर्भाग्यवश फरवरी 2021 से अर्थव्यवस्था पर दूसरी लहर का असर शुरू हो गया और आमदनी में दोबारा गिरावट होने लगी। दूसरी लहर के समय जनवरी से मई 2021 के बीच भारत में प्रति-व्यक्ति मासिक औसतन आमदनी में दोबारा 19 प्रतिशत की गिरावट आई। फरवरी 2020 की तुलना में मई 2021 में यह आमदनी 22 प्रतिशत कम थी। जहां पहली लहर का असर शहरी इलाकों पर ज्यादा था, वहीं दूसरी लहर ने ग्रामीण क्षेत्रों पर ज्यादा प्रभाव छोड़ा।

भारत के सभी परिवारों की महामारी के पहले और फिर बाद के हालात की हम तुलना करें तो पाते हैं कि पहली लहर के दौरान अमीर घरों की तुलना में गरीब घरों की आय में अधिक गिरावट आई। भारत के सबसे धनी 25 प्रतिशत परिवारों ने सबसे कम असर देखा। फरवरी और अप्रैल 2020 के बीच इन परिवारों की आय में 33 प्रतिशत की गिरावट आई। जबकि बाकी के 75 प्रतिशत परिवारों ने अपनी 46 प्रतिशत आमदनी गंवाई। शहरी क्षेत्रों में पहली लहर के बाद आमदनी में गिरावट का परिमाण अधिक रहा। फरवरी और अप्रैल 2020 के अंतराल में सबसे गरीब शहरी परिवारों की आमदनी में 57 प्रतिशत की कमी आई, जबकि सबसे धनी परिवारों की आमदनी 40 प्रतिशत घटी। दूसरी लहर के वक्त सबसे गरीब घरों की आमदनी सबसे तेजी के साथ बढ़ती हुई महामारी-पूर्व स्तर तक करीब-करीब आ गई थी। जबकि सबसे धनी परिवारों की स्थिति में सुधार सबसे धीमा रहा था। जहां जनवरी 2021 तक सबसे गरीब 50 प्रतिशत घरों की आमदनी पूर्व-महामारी स्तर से भी कुछ बेहतर हो चली थी, वहीं सबसे अमीर 50 प्रतिशत घरों की कमाई महामारी-पूर्व स्तर के मुकाबले पांच-छह प्रतिशत नीचे ही थी। ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहरी इलाकों में पहली लहर के बाद सुधार की गति धीमी रही। आय-श्रेणी के अनुसार पारिवारिक आमदनी में सुधार और लौटती नौकरियों के बीच एक स्पष्ट तालमेल देखा जा सकता है। निम्नतम श्रेणी में सुधार की गति दैनिक मजदूर और निजी व्यवसाय के लोगों में सबसे तेज थी। वहीं दूसरी ओर वेतन आश्रित लोगों की खोई आजीविका में सुधार की दर धीमी रही और यह अपेक्षित भी था। दूसरी लहर का आमदनी पर असर हालांकि पहली लहर के मुकाबले कम रहा, पर फिर भी काफी गंभीर था। हर तबका प्रभावित हुआ, पर सबसे ज्यादा मार इस बार बीच के 50 प्रतिशत घरों पर पड़ी। इस बार सबसे गरीब और सबसे अमीर लगभग बराबर प्रभावित रहे।

यद्यपि आंकड़े ऐसा इशारा करते लग रहे हैं कि हमारी गरीब आबादी की स्थिति पूर्ण रूप से सुधर चुकी है और सब कुछ महामारी-पूर्व जैसा यानी ठीकठाक हो चला है, लेकिन इस पर संतोष जताना दोहरी गलती होगी। पहली कि महामारी के पहले भी सब ठीक नहीं था। दूसरी यह कि हम मानव के मामले मशीनी नहीं होते। मार्च और अप्रैल 2020 के तालाबंदी के महीनों में जब सब ठप था, तब सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों यानी रोज कमाने-खाने वालों ने भारी मात्रा में उधार लिया होगा। पहली लहर के बाद कई सर्वेक्षणों से भी यह लगभग साबित हो चुका है कि महामारी के कारण कर्जदारी में भारी उछाल आया। भले ही इन परिवारों को नौकरी वापस मिल गई हो और इनकी आमदनी भी पहले जितनी हो गई हो, लेकिन अभी भी ये परिवार दीर्घकालीन ऋणग्रस्तता से जूझ रहे हैं। यह इनकी और इनसे ऊपर की आय-श्रेणी वाले वर्गों के बीच एक गुणात्मक फर्क है। जीवनयापन के लिए बेबसी में लिए गए कर्ज की रकम बड़ी नहीं होती, लेकिन यह कर्ज भारी सूद पर मिलता है, जिस वजह से गरीब उबर नहीं पाता। मनरेगा, विस्तृत खाद्य सहायता और शहरी रोजगार के लिए यथेष्ट वित्तीय अनुदान के साथ अगर सरकार इन्हें मामूली या नगण्य ब्याज पर यह छोटी रकम उपलब्ध करा दे तो ये लोग न केवल खुद को, बल्कि अर्थव्यवस्था को आर्थिक संकट से निकालने में अपना पूर्ण योगदान दे पाएंगे।

पावरफुल इंजन वाली XUV300 फेसलिफ्ट

130 पीएस का पावर

230 एनएम का टार्क

इस साल महिंद्रा अपनी सब-कॉम्पैक्ट XUV300 का फेसलिफ्ट लांच कर सकती है. इसके लुक में तो बदलाव किया ही जाएगा, साथ ही इसके नए इंजन के साथ आने की भी उम्मीद की जा रही है. हाल ही में फेसलिफ्ट मॉडल की कुछ रेंडर तस्वीरें सामने आई हैं. तस्वीरों से पता लगता है कि कार में नया महिंद्रा लोगो, नए डिजाइन वाले हेडलैंप्स, नए टेललैंप्स और 17 इंच के अलॉय व्हील दिए जा सकते हैं. इसके अलावा ऑल ब्लैक डैशबोर्ड दिया जाएगा.

नया इंजन भी मिलेगा

इसमें नया 1.2 लीटर का TGDI इंजन दिया जा सकता है. यह टर्बो पेट्रोल इंजन 130 पीएस की पावर और 230 एनएम का टार्क जेनरेट करता है, जो एक्सयूवी 300 के वर्तमान पेट्रोल इंजन से 20 पीएस और 30 एनएम ज्यादा है. नई मोटर मल्टी-पॉइंट फ्यूल इंजेक्शन के बजाय डायरेक्ट इंजेक्शन का उपयोग करती है. इंजन को 6-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ जोड़ा जाएगा.

ऐसा होगा इंटीरियर

इंटीरियर पहले जैसा ही रहने की उम्मीद की जा रही है. XUV300 में कई सेगमेंट-फर्स्ट फीचर्स हैं. इसमें डुअल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल, 7 एयरबैग, फ्रंट पार्किंग सेंसर, 4 डिस्क ब्रेक, हीटेड ORVMs, फ्रंट टायर पोजिशन इंडिकेटर, 7 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम और स्मार्टफोन कनेक्टिविटी जैसे फीचर्स मिलेंगे. फेसलिफ्ट वर्जन में स्पोर्टी ऑल-ब्लैक इंटीरियर थीम, नई सीट अपहोल्स्ट्री और रियर एसी वेंट दिए जाएंगे.

सेफ्टी में 5 स्टार

वर्तमान एक्सयूवी300 को Global NCAP सेफ्टी टेस्ट में 5 स्टार रेटिंग मिली है. क्रैश टेस्ट में XUV300 ने एडल्ट ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन के लिए 5-स्टार रेटिंग और चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन के लिए 4-स्टार रेटिंग हासिल की थी. कंपनी XUV300 का इलेक्ट्रिक वर्जन भी लाने का ऐलान कर चुकी है. हाल ही में, महिंद्रा ने पुष्टि की कि ई-एसयूवी 2023 में लांच होगी.

सबसे अधिक माइलेज वाली कार सेलेरियो CNG

मारुति सेलेरियो **CNG** इस साल कंपनी की पहली लांच होने वाली कार है, खबर है कि इस सीएनजी मॉडल को 20 जनवरी को बाजार में उतारा जा सकता है. मारुति सेलेरियो **CNG** अब तक की सबसे अधिक माइलेज वाली मॉडल हो सकती है. नवंबर में इसके पेट्रोल वर्जन को लाया गया था और यह अब तक की सबसे अधिक माइलेज वाली पेट्रोल कार बन चुकी है. मारुति सेलेरियो पेट्रोल मॉडल 26.68 किमी/लीटर का माइलेज देती है, जिस वजह से यह देश की सबसे अधिक माइलेज कार बन चुकी है. ऐसे में हमारा अनुमान है कि इसकी सीएनजी मॉडल 30 किमी/किलोग्राम का माइलेज दे सकती है. कंपनी लगातार अपने सीएनजी मॉडल्स का विस्तार करने में लगी हुई है.

स्पेसिफिकेशन

मारुति ने नए सेलेरियो में 1.0-लीटर K10C सीरीज 3-सिलेंडर डुअल जेट पेट्रोल इंजन दिया है. यह इंजन अधिकतम 65 बीएचपी का पॉवर और 89 न्यूटन मीटर का पीक टॉर्क पैदा करने में सक्षम है. नई सेलेरियो में 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ ऑटोमैटिक गियरबॉक्स का भी विकल्प दिया गया है. नई सेलेरियो को कुल 6 रंगों में पेश किया गया है जिसमें सिल्की सिल्वर, ग्लिस्टरिंग ग्रे, आर्कटिक व्हाइट और कैफीन ब्राउन के साथ दो नए रंग फायर रेड और स्पीडी ब्लू शामिल हैं. इसे 4 ट्रिम और 7 वैरिएंट में पेश किया गया है. नई सेलेरियो में आकर्षक ग्रिल, नए अलॉय व्हील, फॉग लाइट देखने को मिलते हैं. वहीं इंटीरियर में नया टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, कॉल और म्यूजिक असिस्ट के साथ मल्टी फंक्शन स्टीयरिंग व्हील, सिंगल पॉड इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और गोलाकार डिजिटल स्क्रीन दिया गया है. इसके हेड लाइट के डिजाइन को अपडेट किया गया है. इस कार में कई नए और अपडेटेड फीचर्स जैसे ऐप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो की कनेक्टिविटी के साथ स्मार्ट प्ले टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम दिया गया है. इसके अलावा इस कार में आइडल स्टार्ट/स्टॉप फंक्शन के साथ पुश स्टार्ट/स्टॉप बटन फीचर मिलता है. इसी के साथ अब नई सेलेरियो में डोर रिक्वेस्ट स्विच भी दिया गया है. नई मारुति सेलेरियो में बूट स्पेस को बढ़ाकर अब 313 लीटर कर दिया गया है. कंपनी ने नई सेलेरियो में सेफ्टी फीचर्स का भी खास ध्यान रखा है. इसमें ड्राइवर और फ्रंट सीट पैसेंजर एयरबैग, सीट बेल्ट रिमाइंडर, एबीएस-ईबीडी, इंजन इम्मोबिलाइजर, पीछे के दरवाजों पर चाइल्ड प्रूफ लॉक, स्पीड अलर्ट सिस्टम, हिल होल्ड असिस्ट, रिवर्स पार्किंग सेंसर जैसे सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं.

इलेक्ट्रिक सुपरबाइक

3 सेकंड में पा लेगी 100kmph की स्पीड

स्टार्टअप कंपनी **Damon** मोटर्स ने कंपनी की दूसरी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल को पेश किया है. **HyperFighter** नाम की इस बाइक को कंज्यूमर इलेक्ट्रिक शो में पेश किया गया है. यह कंपनी की **HyperSport** इलेक्ट्रिक सुपरबाइक पर आधारित है. खास बात है कि बाइक में 230 किलोमीटर से ज्यादा की रेंज मिलती है और इसकी टॉप स्पीड भी 270**kmph** से ज्यादा है.

हाइपरफाइटर इलेक्ट्रिक बाइक को 3 ट्रिम्स- कोलोसस, अनलिमिटेड-20 और अनलिमिटेड-15 में लाया गया है. अनलिमिटेड-15 इसका बेस मॉडल है, जो 197 बीएचपी के साथ आता है, जबकि कोलोसस और अनलिमिटेड 20 वेरिएंट 148 बीएचपी जेनरेट करते हैं. तीनों ही वेरिएंट में हाइपरस्पोर्ट के मोनोकोक चेसिस का इस्तेमाल किया गया है. सबसे महंगे कोलोसस वेरिएंट में प्रीमियम व्हील, सिंगल साइडेड स्विंगआर्म, ओहलिन्स सस्पेंशन और ब्रेम्बो ब्रेक दिए गए हैं. टॉप वेरिएंट हायपरफाइटर Colossus में 20 kWh की बैटरी दी गई है. यह फुल चार्ज में 235 किमी रेंज ऑफर करेगी. इसमें 197 bhp (150 kW) पावर होगी. डेमन मोटर्स के अनुसार, कोलोसस वेरिएंट की टॉप स्पीड 274 किमी प्रतिघंटे तक है और यह सिर्फ 3 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ने में सक्षम है. तीनों मॉडल्स एक CoPilot के साथ आते हैं. यह एक एडवांस 360-डिग्री वार्निंग सिस्टम है, जो चलती वस्तुओं को ट्रैक करने के लिए रडार, कैमरा और सेंसर का इस्तेमाल करता है. साथ ही आप बाइक के हैंडलबार और विंडस्क्रीन को अपने हिसाब से एडजस्ट भी कर सकते हैं.

ऑफिस कम्यूटर साइकिल 'ट्रेसर'

25km की टॉप स्पीड

60-80 किमी की रेंज

वॉल्ट्रिक्स मोबिलिटी ने ऑफिस कम्यूटर साइकिल 'ट्रेसर' लांच की है. इस लांच के साथ ही कंपनी ने ई-साइकिल सेगमेंट में प्रवेश कर लिया है. इस इलेक्ट्रिक साइकिल में 250-वॉट का मोटर दिया गया है. इसमें आपको लिथियम-आयन बैटरी पैक मिलता है.

इस साइकिल को आपको बार-बार चार्ज करने की जरूरत नहीं होगी, जिससे आपको चार्जिंग स्टेशनों की ज्यादा आवश्यकता नहीं होगी. वहीं इसके रेंज की बात करें तो कंपनी का दावा है कि यह साइकिल सिंगल चार्ज में 60-80 किमी. की यात्रा करती है. इसकी स्पीड की बात करें तो यह साइकिल 25 किलोमीटर प्रतिघंटे की स्पीड देती है. साइकिल भी पैडल असिस्ट के 5 स्तरों, थ्रॉटल-ओनली (एक पारंपरिक बाइक की तरह) और मैनुअल पैडलिंग मोड के साथ आती है.

150Km रेंज वाला इलेक्ट्रिक स्कूटर

100 kmph टॉप स्पीड

इलेक्ट्रिक व्हीकल कंपनी वन मोटो ने भारतीय बाजार में एक पावरफुल स्कूटर इलेक्ट्रा लांच किया है. सबसे खास बात है कि स्कूटर में 150Km की रेंज और 100 kmph तक की स्पीड मिलती है.

इस स्कूटर का डिजाइन काफी आकर्षक है. इसे रेट्रो लुक देने के साथ फीचर लोडेड भी बनाया गया है. कंपनी ने नए स्कूटर को मैट ब्लैक, शाइनी ब्लैक, ब्लू, रेड और ग्रे समेत 5 कलर ऑप्शन में उतारा है. कंपनी के सभी स्कूटर One-App सपोर्ट के साथ आते हैं. एप के जरिए आपको मेंटेनेंस अलर्ट समेत स्कूटर से जुड़ी कई जानकारियां मिलती हैं. स्कूटर में 72V 45AH की लीथियम आयन बैटरी दी गई है. कंपनी दावा करती है कि स्कूटर फुल चार्ज में 150 किलोमीटर की रेंज ऑफर करता है और इसकी टॉप स्पीड 100 किलोमीटर प्रति घंटा की है. यह फुल चार्ज होने में सिर्फ 4 घंटे का समय लेता है. वन मोटो अपने यूजर्स को मोटर, कंट्रोलर और बैटरी पर 3 साल की वारंटी दे रही है. स्कूटर के साथ एनालॉग डिस्प्ले, हाइड्रोलिक डिस्क ब्रेक (फ्रंट/रियर), और ऑप्शनल क्रोम अपग्रेड जैसी सुविधाएं भी मिलती हैं.

डिजाइन और फीचर्स

साइबोर्ग योडा इलेक्ट्रिक बाइक में नियो-रेट्रो डिजाइन के साथ क्रूजर लुक दिया गया है. इसमें राउंड शेप वाले हेडलैंप्स, सर्कुलर टेललाइट्स और टर्न इंडिकेटर, टियरड्रॉप शेप वाला फ्यूल टैंक और स्प्लिट सीट डिजाइन देखने को मिलता है. एक पारंपरिक क्रूजर की तरह इसमें एक लंबा और चौड़ा हैंडलबार मिलता है. लो-सैडल और फॉरवर्ड-सेट फुटपेग आपको आरामदायक सफर का एहसास दिलाते हैं.

रेट्रो लुक वाली ई-क्रूजर बाइक

भारतीय बाजार में नई इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनी Ignitron मोटोकॉर्प ने एंट्री की है. कंपनी ने CYBORG ब्रांड के अंतर्गत देश की पहली इलेक्ट्रिक क्रूजर बाइक Cyborg Yoda लांच की है. इस ब्रांड के तहत प्रीमियम इलेक्ट्रिक बाइक्स को लाया जाएगा. नई बाइक फुल चार्ज में 120 किलोमीटर तक का सफर तय करने में सक्षम है. यह बैटरी स्वैपिंग सुविधा के साथ आती है.

साइबोर्ग योडा में एलईडी टेललाइट्स और टर्न इंडिकेटर्स, एक एंटी-थेफ्ट अलार्म, एक पिलर बैकरेस्ट, कीलेस इग्निशन, साइड पैनियर बॉक्स और एक एडजस्टेबल सस्पेंशन सेटअप मिलता है. हालांकि कंपनी ने हार्डवेयर कॉन्फिगरेशन की ज्यादा जानकारी नहीं दी है, लेकिन तस्वीरों से पता लगता है कि इसमें आगे की तरफ टेलीस्कोपिक फोर्क्स और पीछे ट्विन स्प्रिंग शॉक एब्जॉर्बर दिए गए हैं.

120 km की रेंज

यह इलेक्ट्रिक क्रूजर एक बार चार्ज करने पर 120 किमी की दूरी तय करेगी. इसके साथ ही एक बैटरी स्वैपिंग स्टेशन, जिसे CYBORG (जूल) स्टेशन कहा जाता है, हर 1 किलोमीटर पर मौजूद होगा. कंपनी कॉम्पैक्ट होम चार्जर भी उपलब्ध कराएगी जो 30 मिनट में 50 प्रतिशत बैटरी को चार्ज करेगा.

Yezdi रोडकिंग बाइक

आइकॉनिक ब्रैंड Yezdi भारतीय बाजार में 2 नए मॉडल्स- Yezdi Roadking और Adventure ला रही है. दोनों बाइक्स में नियो-रेट्रो स्टाइलिंग है जिसमें राउंड हेडलैंप, फोर्क गैटर और टियरड्रॉप-शेप्ड फ्यूल टैंक जैसे फीचर्स दिए गए हैं. इनमें स्पोक व्हील्स का इस्तेमाल किया गया है, जो बाइक्स को क्लासी प्रोफाइल देता है.

इंजन और परफॉर्मेंस

येजदी रोडकिंग स्क्रैम्बलर और रोडकिंग एडवेंचर दोनों में 334cc इंजन का इस्तेमाल किया जा सकता है, जो Jawa Perak में भी मिलता है. यह अधिकतम 30.64 पीएस की पावर और 32.74 एनएम का पीक टॉर्क जेनरेट करता है. इसे 6-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है. दोनों बाइक्स के फ्रंट में स्टैंडर्ड टेलिस्कोपिक फोर्क्स हैं. जहां येजदी स्क्रैम्बलर के रियर में ड्यूल शॉक एब्जॉर्बर हैं, वहीं एडवेंचर में पीछे की तरफ मोनोशॉक यूनिट है. रोडकिंग स्क्रैम्बलर के दोनों सिरों पर 17-इंच के व्हील होंगे, वहीं येजदी एडवेंचर में आगे की तरफ 19-इंच के बड़े व्हील मिलने की संभावना है.

बाइक के दोनों सिरों पर डिस्क ब्रेक होंगे. इसके साथ ही ड्यूल-चैनल ABS को स्टैंडर्ड रूप में पेश किए जाने की उम्मीद है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर ≫ शुक्रवार, 21 जनवरी, 2022

गृह विभाग की समीक्षा बैठक, पीड़ित को हर हाल में न्याय दिलाना हो उद्देश्य

तत्परता और संवेदनशीलता के साथ काम करे पुलिस: गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि प्रदेश में सुदृढ़ कानून-व्यवस्था और अपराधों की प्रभावी रोकथाम राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पुलिस अधिकारी इस दिशा में पूरी तत्परता और संवेदनशीलता के साथ काम करें। पुलिस का प्रयास हो कि किसी भी अपराध में कम से कम समय में गहनता से तफ्तीश हो और अपराधी को सजा एवं पीड़ित को जल्द से जल्द से न्याय मिले। पुलिस अपना काम बिना किसी दबाव के निष्पक्षता और सकारात्मक सोच के साथ करे। गहलोत मुख्यमंत्री निवास पर वीसी के माध्यम से गृह विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पुलिस की कार्यशैली को आधुनिक, पब्लिक फ्रेंडली एवं प्रो-एक्टिव बनाने के उद्देश्य से थानों में स्वागत कक्ष, महिला अपराधों की रोकथाम एवं प्रभावी अनुसंधान के लिए हर जिले में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद का सृजन, अनिवार्य एफआईआर रजिस्ट्रेशन, जघन्य अपराधों के लिए अलग इकाई का गठन, महिला एवं बाल डेस्क का संचालन, सुरक्षा सखी, पुलिस मित्र, ग्राम रक्षक, महिला शक्ति आत्मरक्षा केंद्र जैसे नवाचार किए गए हैं। इनका सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहा है। पुलिस अधिकारी इन नवाचारों का बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित कर कानून-व्यवस्था को और मजबूत करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महिला अपराधों के प्रति विशेष कदम उठाने का परिणाम है कि राज्य में पॉक्सो एक्ट एवं महिला अत्याचार के प्रकरणों के निस्तारण में लगने वाला औसत समय काफी कम हो गया है। दुष्कर्म के मामलों में अनुसंधान समय वर्ष 2018 में 211 दिन था जो वर्ष 2021 में घटकर 86 दिन रह गया है। साथ ही जिलों में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में गठित स्पेशल इंवेस्टिगेशन यूनिट के कारण महिला अत्याचार के लंबित केसों की संख्या 12.5 प्रतिशत से घटकर 9.3 प्रतिशत रह गई है। उन्होंने निर्देश दिए कि इसे और कम किया जाए, ताकि पीड़ित को जल्द से जल्द न्याय मिले। उन्होंने कहा कि महिला अपराधों को लेकर कोई लापरवाही नहीं हो। पुलिस घटना स्थल पर तत्काल पहुंचे ताकि साक्ष्य जुटाने में आसानी हो और प्रकरण के अनुसंधान को गति मिल सके।

पॉक्सो के 510 मामलों में मिली त्वरित सजा: गहलोत ने इस पर संतोष व्यक्त किया कि महिला अपराधों पर प्रभावी रोकथाम की दिशा में कार्य करते हुए पुलिस ने वर्ष 2021 में पॉक्सो एक्ट के 510 प्रकरणों में अपराधियों को सजा दिलवाई है, जिनमें से 4 प्रकरणों में मृत्यु-दण्ड तथा 35 प्रकरणों में आजीवन कारावास की सजा मिली है। कोटखावदा, पिलानी, कांकरोली, पादूकलां, सवाई माधोपुर जैसे कई प्रकरणों में तो रिकॉर्ड समय में अनुसंधान पूरा करते हुए पीड़ित को न्याय दिलाया गया है। उन्होंने कहा कि पुलिस ऐसे मामलों में अभियोजन अधिकारियों के समन्वय से इस समय को और कम करे।

दबंगों, ठगी और संगठित अपराधों पर लगाएं लगाम

मुख्यमंत्री ने दबंगों द्वारा बिंदोरी के दौरान दूल्हे को घोड़ी से उतारने, पुलिस हिरासत में मौत, क्रेडिट कॉपरेटिव सोसायटियों द्वारा ठगी तथा विभिन्न गिरोहों के द्वारा संगठित अपराधों आदि मामलों को गम्भीरता से लेते हुए ऐसे मामलों में प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं को दिए जा रहे आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम को सराहा और कहा कि अधिक से अधिक महिलाओं को इसका प्रशिक्षण दिया जाए। अब तक 4 लाख 40 हजार से अधिक महिलाओं और बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

गहलोत ने कहा कि पुलिस कार्मिक कठिन परिस्थितियों में भी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। ऐसे में उनका मनोबल बनाए रखने के लिए उन्हें समय-समय पर प्रोत्साहित किया जाए। उन्हें पदोन्नति सहित अन्य सेवा लाभ समय पर मिलें। उन्होंने निर्देश दिए कि कॉन्स्टेबल और सब-इंस्पेक्टर की प्रस्तावित भर्तियां समय पर एवं पूरी पारदर्शिता के साथ सुनिश्चित की जाएं।

गहलोत ने कहा कि यह संतोषजनक है कि प्रदेश में अनिवार्य एफआईआर रजिस्ट्रेशन की नीति के बेहतर परिणाम सामने आए हैं। वर्ष 2018 में दुष्कर्म के 30 प्रतिशत से अधिक मामले कोर्ट के इस्तगासे के माध्यम से दर्ज होते थे, इनकी संख्या घटकर अब 16 प्रतिशत रह जाना यह बताता है कि हमारी नीति सफल रही है। गहलोत ने कहा कि अनिवार्य एफआईआर की नीति से महिलाओं सहित कमजोर वर्गों का थाने तक पहुंचने का हौसला बढ़ा है, जिससे अपराधियों में भी खौफ पैदा हुआ है। उन्होंने निर्देश दिए पुलिस अधिकारी अपराधों के पंजीकरण की संख्या में वृद्धि की परवाह किए बिना इस नीति की पालना करें, क्योंकि हमारा अंतिम उद्देश्य पीड़ित को न्याय दिलाना और निर्दोष के हितों की रक्षा करना है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो का भी मानना है कि दर्ज अपराधों की संख्या में वृद्धि का अभिप्राय यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि अपराध भी बढ़े हैं। अपराध के आंकड़ों में वृद्धि राज्य में जन केन्द्रित योजनाओं एवं नीतियों के परिणाम स्वरूप हो सकती है।

नारकोटिक्स के अवैध कारोबार पर रोकथाम के लिए बनाएं डेडीकेटेड यूनिट: मुख्यमंत्री ने कहा कि समय के साथ अपराध के तौर-तरीकों में भी बदलाव आया है। साइबर क्राइम की काफी शिकायतें सामने आ रही हैं। उन्होंने प्रदेश में नारकोटिक्स, ड्रग्स एवं नशीली दवाइयों के अवैध कारोबार पर अंकुश के लिए एक डेडीकेटेड यूनिट बनाने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि बदलते समय के अनुरूप पुलिस सूचना तकनीक तथा सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स का अधिक से अधिक उपयोग करे।

गृह राज्य मंत्री राजेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि प्रदेश में कानून-व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए निरंतर मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान पुलिस नवाचारों तथा टीम भावना से काम करने के मामले में अन्य राज्यों की पुलिस से बेहतर है। उन्होंने निर्देश दिए कि पुलिस हाईवे पर होने वाले अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाए। मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने कहा कि अनिवार्य एफआईआर का निर्णय राज्य सरकार का कानून व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में अहम कदम है। साथ ही, अन्य नवाचारों से भी पुलिस का इकबाल बढ़ा है।

674 थानों में बने स्वागत कक्ष

अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह अभय कुमार ने बताया कि आईपीसी के लंबित प्रकरणों के मामले में राजस्थान का प्रतिशत राष्ट्रीय स्तर के मुकाबले काफी कम रहा है। वर्ष 2019 में राजस्थान सबसे कम लंबित मामलों में दूसरे स्थान पर तथा वर्ष 2020 में तीसरे स्थान पर रहा है। पुलिस सुदृढ़ीकरण की दिशा में उपनिरीक्षक पुलिस के 497 तथा कांस्टेबल के 4748 पदों पर नियुक्तियां दी गई हैं। पुलिस महानिदेशक एमएल लाठर ने बताया कि संगठित अपराधियों, माफियाओं आदि पर भी शिकंजा कसने में पुलिस को सफलता मिली है। फरियादियों की उचित माहौल में सुनवाई के लिए प्रदेश के 674 थानों में स्वागत कक्ष बन चुके हैं और 147 थानों में कार्य प्रगतिरत है।

एडीजी अपराध आरपी मेहरड़ा, एडीजी एसओजी अशोक राठौड़ एडीजी सिविल राइट्स स्मिता श्रीवास्तव, एडीजी दूरसंचार सुनील दत्त, एडीजी सुरक्षा एस सेंगाथिर ने नवाचारों, उपलब्धियों, चुनौतियों एवं विभागीय गतिविधियों के संबंध में विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। बैठक में प्रमुख शासन सचिव वित्त अखिल अरोरा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

एक नज़र

मुस्लिम प्रोग्रेसिव फेडरेशन की आपात बैठक

वक्फ बोर्ड चेयरमैन और अल्पसंख्यक हॉस्टल की कवायद

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुस्लिम तन्जीमों, इदारों और बुद्धिजीवियों की अम्ब्रेला तन्जीम मुस्लिम प्रोग्रेसिव फेडरेशन कोर कमेटी की चार दरवाजा स्थित फेडरेशन के ऑफिस में आपात बैठक आयोजित की गई। यह मीटिंग राजस्थान वक्फ बोर्ड चेयरमैन के चुनाव और दरगाह कब्रिस्तान मोती डूंगरी में बनने वाले अल्पसंख्यक हॉस्टल के मुद्दे पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता फेडरेशन के संयोजक अब्दुल सलाम जौहर ने की। बैठक में उक्त मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में उक्त मुद्दों पर तय किया गया कि फेडरेशन की राय का स्पष्टता से इज़हार होना चाहिए। इसके लिए मुख्यमंत्री को पत्र लिख कर अपनी मांग बताई गई।

बुधवाली बने बोर्ड चेयरमैन: मीटिंग के बाद जारी बयान में संयोजक अब्दुल सलाम जौहर ने बताया कि इस बैठक में हमने सहमति से दो निर्णय लिए। पहला मुख्यमंत्री वक्फ बोर्ड चेयरमैन किसी ईमानदार, काबिल, वक्फ जायदाद की फिक्र व हित रखने वाले को बनाएं, अगर मुख्यमंत्री निवर्तमान चेयरमैन डॉक्टर खानू ख़ान बुधवाली को पुनः चेयरमैन बनाते हैं, तो फेडरेशन मुख्यमंत्री के इस फैसले का स्वागत करती है।

कमेटी गठित करने का सुझाव: दूसरा, दरगाह कब्रिस्तान मोती डूंगरी में बनने वाले अल्पसंख्यक हॉस्टल के मुद्दे पर फेडरेशन ने एक कमेटी गठित करने का सुझाव दिया है। इस कमेटी में मुफ्ती अब्दुल सत्तार, मुफ्ती जाकिर नोमानी और मुफ्ती ख़ालिद मिस्बाही को शामिल करने का सुझाव दिया है, ताकि यह तीनों मुफ्ती शरई एतबार से अपनी राय दें और सरकार उन्हीं की राय से काम करे। इस कमेटी में वक्फ बोर्ड चेयरमैन, डायरेक्टर अल्पसंख्यक निदेशालय और शहर जयपुर के दो मुस्लिम विधायकों (अमीन कागजी किशनपोल और रफीक ख़ान आदर्श नगर) को भी शामिल रहने का सुझाव दिया है, ताकि इन मुफ्ती किराम की राय यह लोग सरकार को बताएं और उसी शरई राय के मुताबिक हॉस्टल की तामीर का फैसला लिया जाए।

बैठक में यह रहे शामिल: मीटिंग में फेडरेशन के सह संयोजक हाजी सय्यद अनवर शाह, कोर कमेटी मेम्बर हाजी निजामुद्दीन, मुफ्ती ख़ालिद मिस्बाही, एम फ़ारूक़ ख़ान, आदिल खान, मैमूना नरगिस और सय्यद अशफ़ाक नकवी शरीक हुए। सभी की सहमति से उक्त निर्णय लिए गए।

स्वच्छ छवि का व्यक्ति बने वक्फ बोर्ड चेयरमैन : जोहर

जयपुर। मुस्लिम प्रोग्रेसिव फेडरेशन के कन्वीनर अब्दुल सलाम जोहर ने आज यहां एक जारी बयान में कहा कि राजस्थान बोर्ड ऑफ मुस्लिम वक्फ के चेयरमैन पद पर राज्य सरकार को स्वच्छ एवं साफ सुथरी छवि के व्यक्ति को बनाया जाना चाहिए। उन्होंने इस संदर्भ में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को भी पत्र लिखकर इस पद पर निवर्तमान चेयरमैन खानू खान बुधवाली को चेयरमैन बनाए जाने की हिमायत की है। वहीं दूसरी ओर कुछ संगठनों द्वारा विरोध किए जाने को जोहर ने दरकिनार करते हुए कहा कि हर मामले में दो पहलू होते हैं, किसी की सोच नकारात्मक होती है तो कोई सकारात्मक सोच के साथ कार्य करता है। हमें सकारात्मक सोच का परिचय देना चाहिए और जो वक्फ संपत्तियों के हित में कार्य करें ऐसे व्यक्ति को चेयरमैन बनाया जाना चाहिए।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने कोविड के दौरान अनाथ हुए बच्चों को चिन्हित कर सहायता एवं सुरक्षा प्रदान करने के दिए निर्देश

मिश्र मंगलवार को राजभवन में अनुसूचित क्षेत्र में जनजाति विकास एवं कल्याण हेतु संचालित योजनाओं की बैठक में ऑनलाइन सम्बोधित कर रहे थे

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने जनजाति बाहुल्य अनुसूचित क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास पर जोर देते हुए कोविड के दौरान अनाथ हुए बच्चों को चिन्हित कर उन्हें तात्कालिक और दीर्घकालिक सहायता और सुरक्षा प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने ऐसे क्षेत्रों के सभी परिवारों को मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत प्रारम्भ कैशलेस उपचार की सुविधा का सुरक्षा कवच प्रदान किए जाने की भी आवश्यकता जताई। उन्होंने चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत पंजीकरण कार्य में तेजी लाते हुए योजना से नहीं जुड़ पाए परिवारों को जल्द से जल्द पंजीकृत किए जाने पर भी जोर दिया। मिश्र मंगलवार को राजभवन में अनुसूचित क्षेत्र में जनजाति विकास एवं कल्याण हेतु संचालित योजनाओं की प्रगति एवं समस्याओं के संबंध में विशेष समीक्षा बैठक में ऑनलाइन सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में वंचित समूहों को हर सम्भव सहायता प्रदान किए जाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों की कोचिंग, शिक्षा छात्रवृति समय पर मिले, इसकी व्यवस्था प्रभावी रूप में सुनिश्चित हो। उन्होंने छात्रवृत्ति स्वीकृति एवं भुगतान की ऐसी आदर्श व पारदर्शी व्यवस्था अपनाए जाने पर जोर दिया जिसमें यथासंभव वित्त वर्ष समाप्त होने के साथ ही राशि विद्यार्थी के खाते में जमा हो जाए। उन्होंने कहा कि यदि आवेदन पत्र में कोई कमी या त्रुटि हो तो उसे निरस्त करने के स्थान पर उसकी पूर्ति करवा शीघ्र विद्यार्थी को लाभान्वित करने का प्रयास होना चाहिए।

राज्यपाल ने अनुसूचित क्षेत्र में जनजातियों के समग्र विकास के लिए योजनाओं का व्यावहारिक क्रियान्वयन किए जाने पर जोर देते हुए कहा कि नवाचार अपनाते हुए ऐसे स्थानों पर अधिकाधिक आदर्श गांव बने। उन्होंने जनजातीय क्षेत्र के बालक-बालिकाओं को सीएसआर के तहत उच्च पदों पर चयन के लिए बेहतर से बेहतर कोचिंग सुविधा दिए जाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री बजट घोषणा में जनजाति उपयोजना का जो 'राजस्थान पैटर्न' लागू हुआ है, उसमें इस तरह से कार्य हो कि वह दूसरे राज्यों के लिए भी अनुकरणीय हो। उन्होंने अनुसूचित क्षेत्र के 5 हजार 696 गावों में से 49 गाँवों को मॉडल विलेज बनाने के बारे में जिलेवार प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों के छात्रावासों में स्वच्छता की प्रभावी व्यवस्था के साथ वहां रहने की अच्छी सुविधाओं का विकास किए जाने के भी विशेष निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आदर्श गावों की प्रगति की मासिक सूचना राजभवन को मिले। उन्होंने स्पष्ट कहा कि इस सम्बंध में को लापरवाही नहीं होनी चाहिए। राज्यपाल ने 'जलजीवन मिशन' योजना के अंतर्गत अनुसूचित क्षेत्र के सभी घरों को जल्द से जल्द कनेक्शन से जोड़कर स्वच्छ जल मुहैया कराने के निर्देश दिए। उन्होंने माही बेसिन क्षेत्र में प्रति वर्ष व्यर्थ बहकर जाने वाले पानी को संचित करने के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इससे स्थानीय स्तर पर कृषि, उद्योग एवं रोजगार के साधन उपलब्ध हो सकेंगे और आदिवासियों के द्वारा पलायन के मामलों में भी कमी आएगी।

मिश्र ने कहा कि आदिवासी बाहुल्य अनुसूचित क्षेत्र रोजगार एवं विकास की दृष्टि से तो पिछड़े हैं पर वहां प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है। उन्होंने ऐसे क्षेत्रों में आम, सीताफल, खजूर, बांस, मक्का, एलोवेरा आदि के उत्पादन को प्रोत्साहित कर उन पर आधारित प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित कर आदिवासियों के विकास एवं आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रभावी प्रयास किए जाने पर जोर दिया।

एसओजी ऑफिस के बाहर धरने पर बैठे सांसद किरोड़ीलाल

रीट, जेईएन और SI परीक्षा के जांच की मांग, बोले- पेपर लीक में रसूखदार शामिल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में रीट, जेईएन और सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा में कथित धांधली के खिलाफ राज्यसभा सांसद किरोडी लाल मीणा एक बार फिर एक्टिव हो गए हैं। बुधवार को किरोड़ी लाल मीणा अपने कुछ समर्थकों के साथ एसओजी मुख्यालय पहुंचे। जहां उन्होंने भर्ती परीक्षा में हुई धांधली की निष्पक्ष जांच को लेकर अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा। इसके बाद सांसद मीणा एसओजी मुख्यालय के बाहर ही धरने पर बैठ गए।

किरोड़ी लाल मीणा ने राजस्थान सरकार और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डीपी जारोली पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि रीट भर्ती परीक्षा में हुई धांधली के लिए डीपी जारोली जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि परीक्षा सेंटर बनाने, ऑब्जर्वर लगाने और सेन्टर तक पेपर पहुंचाने के काम में प्राइवेट लोगों को शामिल करना परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल खड़े करता है। किरोड़ी ने कहा कि जारोली ने ही जयपुर के को-ऑर्डिनेटर डॉ प्रदीप पाराशर के साथ मिल रीट का पेपर लीक किया है। जबकि एसओजी ने अब तक जरौली से पूछताछ तक नहीं की है।

सांसद किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि सिर्फ बत्तीलाल ही नहीं, उसके अलावा भी काफी लोग इस पूरे प्रकरण में शामिल थे। लेकिन, एसओजी ने किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया। बल्कि अब तो इस पूरे मामले में लीपापोती करना शुरू कर दिया है। ऐसे में युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए राजस्थान में हुई फर्जी भर्ती परीक्षाओं की सीबीआई से निष्पक्ष जांच करवाई जानी चाहिए। सांसद किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि भर्ती परीक्षा में हुई धांधली में सत्ता के कई रसूखदार लोग भी शामिल है। ऐसे में राजस्थान पुलिस और स्व्त इस मामले में कुछ नहीं कर पाएगी। इसलिए इस पूरे मामले की CBI से जांच होनी चाहिए। तभी बेरोजगारों के दोषियों पर कार्रवाई हो सकेगी। मीणा ने कहा कि पेपर लीक प्रकरण में राजस्थान अब उत्तर प्रदेश और बिहार से भी बदतर स्थिति में पहुंच चुका है। जिससे हजारों छात्रों का भविष्य खतरे में है।

दरअसल, राजस्थान में REET, पुलिस सब इंस्पेक्टर और JEN भर्ती परीक्षा के दौरान प्रदेशभर में धांधली की कई शिकायतें सामने आई थी। जिसमें सरकार अब तक 2 दर्जन से अधिक लोगों को गिरफ्तार भी कर चुकी है। जिसके बाद छात्रों के साथ अब विपक्ष भी इस पूरे मामले को लेकर सरकार को घेरने में जुट गया था। इसके बाद सरकार ने भर्ती परीक्षा का रिजल्ट जारी कर दिया है। लेकिन किरोड़ी लाल फिर से भर्ती परीक्षा में हुई धांधली के खिलाफ एक बार फिर आंदोलन की राह पर आगे बढ़ रहे है।

नेट थिएट पर फतेह अली खान ने बुनी सुरों की मख़मली जाज़म

संतूर के सौ तारों से निकला सुरों का झरना

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान की धरती पर तेजी से उभरते युवा सन्तूर वादक फतेह अली खान का संतूर पर आघात का बैलेंस और घसीट एवं सपाट की तानों का कुशल निकास ऑनलाइन दर्शकों के लिए रोमांच का कारण बन गया। मौका था शनिवार को नेट-थिएट पर आयोजित सांगीतिक श्रृंखला में संतूर वादन की प्रस्तुति का। नेट-थियेट के राजेन्द्र शर्मा राजू ने बताया कि फतेह अली ने इस शत तन्त्री वाद्य पर अपनी मजबूत पकड़ को दर्शाया वहीं राग किरवानी को अपने वादन का माध्यम चुना। एक ताल में निबद्ध मध्य लय की इस बंदिश को पूर्णमनोयोग से बखूबी निभाया साथ ही द्रुत तीन ताल में छोटी छोटी तानों और तैयारी पक्ष से शास्त्रीय संगीत की मखमली जाजम बुनी। उन्होंने संगीत के सुधीजनों को कमाल ए फन से रूबरू कराया। फतेह अली वादन में इतने रम गए कि देखते ही देखते संतूर के सौ तारों से सुरों का झरना प्रस्फुटित होता नजर आया। फतेह ने अपने वादन का समापन राग पहाड़ी में तेरी तिरछी नजरिया के बान... दादरा की खास प्रस्तुति से किया। उनके साथ तबले पर शफात हुसैन ने सधी हुई संगत कर महफिल को परवान चढ़ाया। संगीत शानू एवं कैमरा जितेन्द्र शर्मा, प्रकाष मनोज स्वामी व दृष्य सज्जा धृति शर्मा, अंकित शर्मा नोनू, रहे।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर >> शुक्रवार, 21 जनवरी, 2022

हमारे प्यारे जीवः कैट्स (बिल्लियाँ)

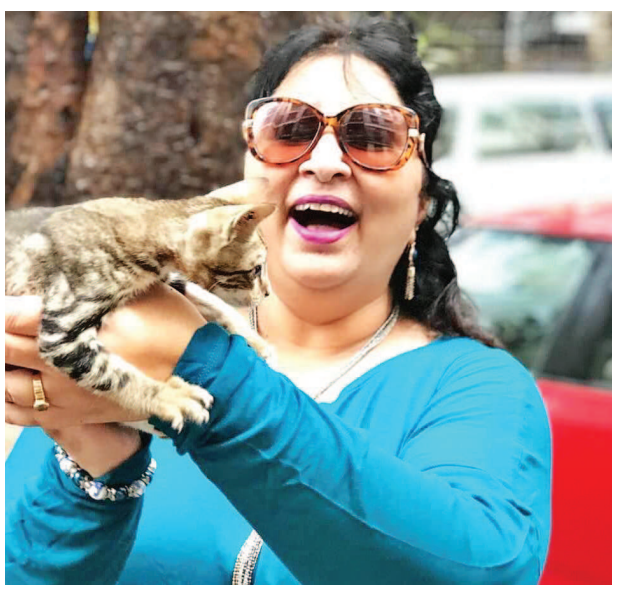

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों आपको मिसेज़ नौरिस याद हैं न? अरे वही अपनी हैरी पॉटर मूवीज़ वाली? फिर तो प्रोफेसर मैक्गोनेल भी याद होगीं जो कि खुद को ट्रांसफ़िगर करने के फ़न में माहिर थीं और दरअसल इसी सब्जेक्ट की टीचर भी थीं? है न? उनको कैट में बदलते देखना कितना मज़ेदार लगता है न?

बच्चों, आप तो जानते ही हो कि हैरी पॉटर मूवीज़ विचक्राफ़्ट पर बनाई गई हैं और वेस्टर्न वर्ल्ड में विचेज़ का कैट्स से गहरा संबंध माना जाता रहा है। लेकिन हमेशा से ऐसा नहीं था। और वस्तुतः ऐसा है भी नहीं क्योंकि कैट्स भी दूसरे जानवरों की तरह जानवर से अधिक और कुछ नहीं हैं । इस तरह की मान्यताओं के पीछे अज्ञानजनित सुपरस्टीशन्स ही होते हैं। जैसे कि अपने देश में कहते हैं न कि बिल्ली रास्ता काट दे तो काम बिगड़ जाता है। पर पता है बच्चों, मैंने हमेशा इस बात के विरोध में उल्टा व्यवहार किया , पर मेरा काम बिगड़ने की बजाय अच्छा ही हुआ।

पर हाँ, कैट्स में कुछ तो ख़ास बात है। ये खुद अपनी बॉस होती हैं , अपनी मर्ज़ी से जो करना हो करती हैं, किसी का ऑर्डर फ़ॉलो नहीं करतीं। आज हम इन्हें 'पेट-एनिमल्स 'के रूप में जानते हैं लेकिन डॉग्स की तरह कभी ये भी जंगली जानवर हुआ करती थीं।दरअसल कैट्स का इतिहास तो इतना पुराना है कि पुरातत्वविदों को इनके लाखों साल पुराने फ़ॉसिल्स मिले हैं। डॉग्स और कैट्स में यह एक बड़ा फ़र्क़ है कि कैट्स में उस जंगलीपन के कुछ अंश अब भी बाक़ी हैं।

कैट्स को क़रीब 5000 साल पहले से टेम करना शुरु कर दिया गया था। लगभग 4000 साल पहले इजिप्ट में इन्हें देवता के रूप में पूजा जाता था, इन्हें सैक्रि फ़ाइज़िज़ तक ऑफ़र किये जाते थे, किसी हाउस-कैट की मृत्यु पर परिवार वाले मातम मनाने के लिए सांकेतिक रूप से अपनी आईब्रोज़ शेव करवा लेते थे, और पूजागृह की कैट के मरने पर तो सारा नगर शोक में डूब जाता था । 'रा' और 'आईसिस' नामक देवी और देवता के रूप में कैट्स पूजी जाती थीं । कैट्स के सिरनुमा मानवीय चित्रों के पाये जाने पर ऐसा ज्ञात हुआ है। कई ममीफ़ाईड कैट्स भी वहाँ मिलती हैं। किसी कैट को यदि कोई मार देता था तो उसे मृत्युदंड का प्रावधान था। इसका एक तार्किक कारण ये माना जाता है कि कैट्स फ़सल को नुक़सान पहुँचाने वाले वमिन्स जैसे चूहों को मारकर आमजन के हित में काम आती थीं।

मध्यकाल में , बारहवीं शताब्दी में रोमन लोगों ने इजिप्ट से लाकर यूरोप में कैट्स को इंट्रोड्यूज़ किया । मगर एक तरफ़ जहाँ इजिप्ट में इनकी इतनी इज्जतअफ़ज़ाई होती थी, वहीं दूसरी तरफ़ यूरोप में इनके प्रति इसके बिल्कुल उलट एटीट्यूड था । वहाँ बिल्लियों को शैतान के दूत या इविल-स्पिरिट के रूप में देखा जाता था और हज़ारों की तादाद में इन्हें मार दिया गया था । इनका मुख्य भोजन चूहा होने की वजह से प्लेग फैलाने में इनका हाथ होना माना जाता था जो कि सच भी हो सकता है।

आज डॉग्स की ही तरह कैट्स भी प्रिय पेट्-एनिमल्स में शामिल हैं । ख़ासकर फ़र वाली 'अंगोरा'या 'पर्शियन ' कैट्स बहुत पसंद की जाती हैं ।

-डॉ. कविता माथुर

खुशियों की बहार!

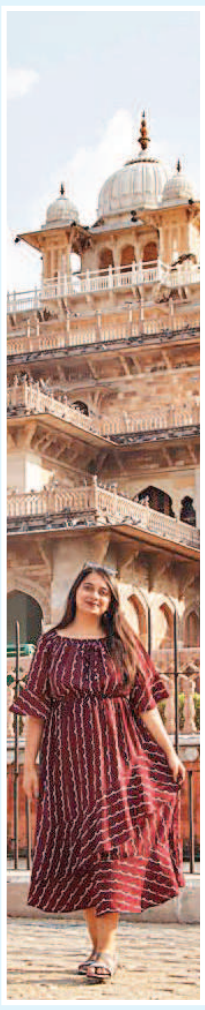

लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़े कैसा भी हो प्रहार!
खुशनुमा सा वातावरण बनाएं,
चलो कहीं यात्रा कर आए,
प्रकृति की सुंदरता को छूकर,
कुछ जीवन में परिवर्तन लाएं!
अतीत और भविष्य के बारे में क्यों सोचे,
वर्तमान के पलों का होके,
चलते जाए, खिलखिलाते जाए,
चाहे बड़ी सी बड़ी मुसीबत रोके!
मासूम चेहरे को मुस्कान दे,
हर व्यक्ति को सम्मान दें,
पूरे करें दिल से हम भी,
जो भी हमारे अरमान है!
लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़े कैसा भी हो प्रहार!

डॉ. माध्वी बोरसे
राजस्थान (रावतभाटा)

सूरज दादा आओ ना!

प्रिया देवांगन 'प्रियू' छत्तीसगढ़

सूरज दादा सूरज दादा, जल्दी से तुम आओ ना!
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना!!
गाय बैल अरु कुत्ता बिल्ली, ठंडी में वो भी रोते।
थर थर थर थर काँपे सारे, नहीं रात में वो सोते।।
लुका छुपी का खेल खत्म कर, अब आगे तुम आओ ना!
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना!!
आग तापते हम तो सारे, घर अंदर घुस जाते हैं।
स्वेटर मफलर शॉल ओढ़ कर, गर्म हवा भी पाते हैं।।
कुत्ता बिल्ली सहमे बैठे, जाये कहाँ बताओ ना!
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना!!
बेजुबान ये जीव जन्तु सब, ठंडी में मर जाते हैं।
किसे बताये अपनी हालत, रातों को चिल्लाते हैं।।
देखो हालत इनकी दादा, थोड़ा तरस दिखाओ ना!
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना!!

हर शाकाहारी को पीना चाहिए घर पर बना ये चमत्कारी दूध, मिलती है बहुत ज्यादा ताकत

दूध एक हेल्दी ड्रिंक है, जो मजबूत हड्डी और शारीरिक विकास के लिए जरूरी है। लेकिन, कुछ लोगों को गाय-भैंस के दूध में मौजूद लैक्टोज से एलर्जी होती है। जिसके कारण वह दूध पीना ही छोड़ देते हैं। लेकिन, इस आर्टिकल में आपको गाय और भैंस के दूध से ज्यादा ताकतवर दूध के बारे में बताया जा रहा है। इस दूध की खासियत यह है कि आप इसे घर पर ही बना सकते हैं और इसमें प्रोटीन भी काफी ज्यादा होता है। यह खास और चमत्कारी दूध है सोया मिल्क...आइए, सोया मिल्क को घर पर बनाने का तरीका और इसके फायदे जानते हैं.

सामग्री

125 ग्राम सोयाबीन
1 लीटर पानी
दूध छानने के लिए सूती महीन कपड़ा

सोया मिल्क बनाने की रेसिपी

सबसे पहले सोयाबीन को अच्छी तरह धोकर साफ कर लें और 8-12 घंटे तक

जरूरतानुसार पानी में भिगोकर रख दें।

8-12 घंटे बाद सोयाबीन को उसी पानी में उबाल लीजिए।

गर्म सोयाबीन को मसलकर छिलके अलग कर लीजिए।

अब सोयाबीन को मिक्सी जार में डालकर पीस लीजिए।

जब सोयाबीन पिस जाए, तो 1 लीटर पानी डालकर दोबारा पीस लीजिए।

इसके बाद सोयाबीन के दूध को गर्म करें और जो उसके ऊपर झाग आए, उसे निकाल दें।

आख़िरी में दूध को महीन सूती कपड़े से छानकर सोया मिल्क बना लें।

आपका शुद्ध सोया मिल्क तैयार है।

सोया मिल्क के फायदे

यूएसडीए के मुताबिक, 100 ग्राम सोया मिल्क में करीब 3 ग्राम प्रोटीन होता है. जो आपके शरीर को ताकतवर बनाता है। यह शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का बेहतरीन स्त्रोत होता है।

यह लैक्टोज-फ्री होता है, जिस कारण लोगों को लैक्टोज एलर्जी से छुटकारा मिलता है।

सोया मिल्क में सोडियम, पोटैशियम, विटामिन बी12, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम आदि मौजूद होता है।

सोयाबीन के दूध में मौजूद आयरन एनीमिया की समस्या दूर करने में मदद करता है।

इसमें शरीर के लिए लाभदायक एंटीऑक्सीडेंट्स भी होते हैं।

सोया मिल्क में कैल्शियम भी होता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाता है।

(18 जनवरी) पुण्य-तिथि

संगीत-जगत के सिरमौर कुंदनलाल सहगल

डा. शिबन कृष्ण रैणा, दुबई

हर कलाकार की तरह ही सहगल साहब को शोहरत की बुलंदियों तक पहुंचने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। सहगल की प्रारंभिक शिक्षा बहुत ही साधारण तरीके से हुई थी। उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ी थी और जीवन-यापन के लिए उन्होंने रेलवे में टाईमकीपर की मामूली नौकरी की। बाद में उन्होंने रेमिंगटन नामक टाइपराइटिंग मशीन की कंपनी में सेल्समैन की नौकरी भी की। संगीत से उनका गहरा लगाव था। कहते हैं कि वे एक बार उस्ताद फैयाज खाँ के पास तालीम हासिल करने की गरज से गए, तो उस्ताद ने उनसे कुछ गाने के लिए कहा। उन्होंने राग दरबारी में खयाल गाया, जिसे सुनकर उस्ताद ने गद्गद् भाव से कहा कि बेटे मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे सीखकर तुम और बड़े गायक बन सको।

सहगल के पिता अमरचंद सहगल जम्मू शहर में तहसीलदार थे। अचानक एक दिन केएल सहगल बिना किसी से कुछ कहे घर छोड़कर चले गए। नौकरी की तलाश में वे कई जगह घूमे-भटके जिनमें मुरादाबाद, कानपुर, बरेली, लाहौर, शिमला और दिल्ली शहर शामिल हैं।

कोलकत्ता में उनके सम्मान में एक बड़ा आयोजन होने वाला था। सहगल साहब अपनी पत्नी आशा रानी के साथ कार द्वारा कानपुर के रास्ते कलकत्ता जा रहे थे। कानपुर पहुंचने पर सहगल ने ड्राइवर से रुकने के लिए कहा। ड्राइवर ने कार साइड में खड़ी कर दी। सहगल साहब पैदल ही शहर के भीतर चले गए। काफी देर हो गयी। सहगल साहब कहीं नजर नहीं आ रहे थे। पत्नी और ड्राइवर चिंता करने लगे। तभी दूर से सहगल साहब कार की तरफ आते हुए दिखाई दिए। पत्नी ने देखा कि सहगल साहब की आँखें पुरनम थीं। पूछने पर सहगल बोलेः आशा! मैं आज उन गलियों और सड़कों को देखने गया था जिन पर बेकारी और गर्दिश के दिनों में मैं खूब भटका था।' कहते-कहते सहगल साहब ने अपनी आँखें पोंछी और कार में बैठ गए।

कविता

ओमिक्रॉन स्वाहा!

मेरी जेब काटकर चला गया साल
कटी हुई जेब से झाँकती है कमीज
तो मचलने लगती है उंगलियाँ
इधर-उधर से आये संदेशों को समेटने के लिए
जिसमें ओमिक्रॉन भी एक है
भाइयों में अनेक है
अब खुलने लगी है तारीखों की नई दुकान
जगाने आ गई है शुभकामना
कर्मक्षेत्र में संकल्प की डूबकी लगायेंगे हम
जंग- ए - फतह की लड़ाई लड़ेंगे हम
जीतेंगे जंग
होगा 'उसका' अंग भंग
और अन्त में होगा ओमिक्रॉन स्वाहा!
ओमिक्रॉन स्वाहा! ओमिक्रॉन स्वाहा!!

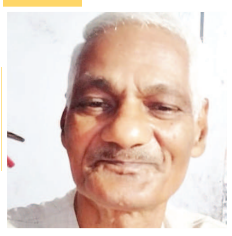

नरेन्द्र प्रसाद सिंह
नवादा (बिहार)

दोस्त

संगीता गुप्ता

ज़िंदगी मतलब एक धुंधली सी शाम
चार दोस्त एक टेबल और
चाय की चुस्कियाँ
ज़िंदगी मतलब
एक गाड़ी, सात दोस्त, खुले शीशे और लंबा पहाड़ी रास्ता।
ज़िंदगी मतलब
एक दोस्त का घर हल्की सी बारिश जगजीत सिंह की ग़ज़ल
और कुछ अंतरंग बातें
ज़िंदगी मतलब
स्कूल के दोस्त
बंक की हुई क्लास
एक कचोरी दो समोसे
और बिल देने का झगड़ा
ज़िंदगी मतलब
कुछ सालों बाद अचानक
पुराने दोस्त का एक मैसेज
धुंधली पड़ी कुछ भीगी सी यादें
और दिल में उठती एक कसक
दोस्त बहुत से मिलते हैं
कुछ क़रीबी होते हैं
कुछ ख़ास होते हैं
कुछ से हम प्यार करते हैं
कुछ विदेश जा बसते हैं
कुछ शहर बदल लेते हैं
कुछ हमें भूलने की कोशिश करते हैं
कुछ को हम भुलाने की कवायद में रहते हैं
पर दोस्त कभी दिल से दूर नहीं जाते
वे सदा याद आते हैं
दोस्तों का थोड़ा सा प्यार और साथ
हमारे जीवन का हिस्सा बन जाता है
जीवन अनिश्चित है
पता नहीं अगले पल क्या हो जाए
आओ दोस्तों को फोन मिलाए
पता नहीं कल वक्त हमें यह मौका दे या नहीं!

इल्तिज़ा

ये कोरोना का क़हर है, संभल जाओ ज़रा
कई रूप में है ये बहरूपिया, संभल जाओ ज़रा।
दिन ब दिन बढ़ते जा रहे हैं मुआमले
कैसे कहें कि अब तो, संभल जाओ ज़रा।
क्या इंतज़ार है, जानलेवा मुश्किल का
कुछ तो समझदार बनो, संभल जाओ ज़रा।
हर तरफ़ शोर है बढ़ती हुई पाबंदी का
खुद को भी पाबंद करो, संभल जाओ ज़रा।
इत्तिफ़ाक़ है कि तुम पर बुरी नहीं गुज़री
जिन पे गुज़री है उन्हें देखो, संभल जाओ ज़रा।
अपनी न सही, औरों की ख़ातिर ही सही
मर्ज़ को और न बढ़ाओ, संभल जाओ ज़रा।
फ़लक़ इतनी - सी है बस इल्तिज़ा तुम से
भीड़ से दूर रहो, मास्क पहनो, संभल जाओ ज़रा।

साकार फ़लक़
जयपुर

हाल ए दिल

हाल ए दिल
हाल ए दिल का जुनून
दर्द या एक सुकून
एक पल में ही कहीं
दोनों तय कर चली
धड़कने मेरी, मेरे संग ही नहीं
साँसे लिपटने लगी,
दो नब्ज़ों से तेरी,
था मैं गया बदल या तुम वही..
बेफिक्र सी वो घड़ी
बंद हाथों का जिक्र
तुमने ना मैंने सुना..
चुप सी चले ये हवा
बोले ना कुछ ये वफ़ा,
बांधे सब सिलसिले
बिन बोले कुछ कहे,
जादू था वो जहाँ
सपनों संग भी छिपा,
बाहों संग भी घुला
बरसों का कारवाँ....

शिवांग शुक्ला
गीतकार ,गायक, शार्ट फ़िल्म मेकर
जयपुर (राजस्थान)

भारत में आख़िर वृद्धाश्रमों की ज़रूरत क्यों?

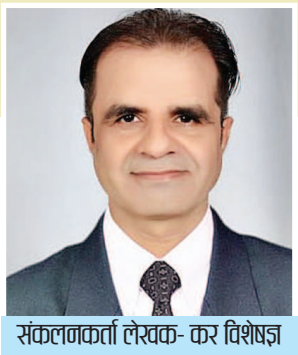

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ
एडवोकेट किशन सनमुखदास
भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति और सभ्यतागत मूल्यों के मुख्य पहलू हैं

भारतीय संस्कृति और सभ्यता, रीति रिवाज, त्यौहार, आध्यात्मिक आस्था, संयुक्त परिवार हजारों साल पुराने और जग प्रसिद्ध है। जिसे देखने अनेक देशों से सैलानी भारत आते हैं और अचंभित होकर उन स्थितियों में मशगूल हो जाते हैं। परंतु हम भारत में अनेक सालों से कुछ वाक्यांश सुनते आ रहे हैं कि, गया वह जमाना! जमाना बदल गया है! किस जमाने में जी रहे हो! यह पुराने जमाने के ढकोसले विचारों का है। इत्यादि अनेक बातें आज के युवा अन्यों पर शिकींजे कसते हुए कहकर ठहाके लगाते हैं।

साथियों बात अगर हम अपने माता-पिता दादा-दादी के प्रति अपनी फ़र्ज अदायगी और भारतीय संस्कृति सभ्यतागत मूल्यों की करें तो आज के नए पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत ज़माने में अपने बड़े बुजुर्गों के मान-सम्मान, सभ्यतागत फ़र्ज अदायगी, जवाबदारी से हमारे बहुत मात्रा में युवा पीछे हटते हुए दिखाई दे रहे हैं। जिसका खुल्ला प्रमाण वृद्ध आश्रमों की बढ़ती हुई संख्या है। आख़िर वृद्ध आश्रमों की जरूरत भारत जैसे सांस्कृतिक सभ्यतागत धन्य देश में क्यों? साथियों बात अगर हम युवाओं और माता-पिता बुजुर्गों के बीच बढ़ती अनबन, खाई और वृद्ध आश्रमों में वृद्धों की बढ़ती संख्या की करें तो इसके चार मुख्य कारण हैं-

(1) युवाओं का नौकरी के लिए अपने पैतृक स्थान से बाहर जाकर अन्य बड़े शहरों मेट्रो सिटीज, विदेशों में सेट होना

(2) पाश्चात्य संस्कृति का युवाओं पर असर

(3) भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी की कमी

(4) माता-पिता व बुजुर्गों के वर्तमान समय के विचारों में ढलनें की कमी।

आज हर गांव, छोटी बड़ी सिटी का युवा चाहे वह मेल हो या फीमेल बाहर जाकर नौकरी करना चाहता है जिसमें ऐसे धनाढ्य वर्ग भी शामिल है जो सर्वसाधन संपन्न है फ़िर भी उन्हें ज़ाब करना पसंद है इसमें अधिकतम परिणाम यह देखने को मिले हैं कि युवा एक बार अगर बाहर गया, चाहे वह देश में हो या विदेश में, तो उसके वापस अपने पैतृक स्थान पर लौट आने की उम्मीद कम ही रहती है!! और संयुक्त परिवार से टूट की ओर कदम बढ़ते हैं लेकिन वे माता-पिता घरबार के लिए शुरू में खर्च भेजते हैं बाद में स्थिति विपरीत हो जाती है।

पाश्चात्य संस्कृति का युवाओं पर विपरीत असर हुआ है। आज युवाओं को कृत्रिम संसाधनों पर व्यय, प्यार व्यार, इश्क का भूत दिमाग में सवार रहता है, हालांकि प्यार करना कोई बुरी बात नहीं है पर माता-पिता को दुखी कर यह सब करना उचित नहीं। जुआ, सट्टा, मदिरा इत्यादि असामाजिक विकार, आदतों से ग्रसित होने के कारण माता-पिता, घर वालों के लिए स्थिति विपरीत हो जाती है और संयुक्त परिवार टूट की ओर कदम बढ़ाता है जिसके उदाहरण हम सब अपने आसपास देख सकते हैं यह भी हमारी छोटी सिटी में अनेक स्थानों पर हुआ है जिसमें गरीब से लेकर अमीर तक ग्रसित है। आज अनेक युवाओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी तथा संयुक्त परिवार का महत्व पता नहीं है, या कम है जिसके कारण उनको श्रावण से प्रेरणा लेने में कठिनाई महसूस हो रही है, जिसके लिए हम सबको मिलकर हर जिला स्तर पर, सरकारी तंत्र के साथ मिलकर सामाजिक संस्थाओं को जिला स्तरपर एमओक्यू कर भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों का जनअभियान चलाकर युवाओं को जनजागरण में शामिल करना ज़रूरी है। आज ज़माना वास्तव में बदल गया है उसके अनुसार अब बुजुर्गों माता-पिता को भी बच्चों की खुशियों में खुश रहने, थोड़ा सम्मान पूर्वक त्याग करना समय की पुकार है। परंतु खुद्दारी, सम्मान, आत्मसम्मान और अपनी स्थिति को कभी नहीं खोने देना होगा।

साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा दिनांक 15 जनवरी 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो उपराष्ट्रपति सचिवालय द्वारा जारी पीआईबी के अनुसार उन्होंने एक परिवार में खुद से छोटे सदस्यों का मार्गदर्शन करने और सलाह देने के संबंध में बड़ों की निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अंतरपीढ़ीगत जुड़ाव मूल्य प्रणाली को बचाने और इसे आगे बढ़ावा देने में सहायता करती है। उन्होंने आज संयुक्त परिवार व्यवस्था और बड़ों का सम्मान करने की परंपरा को मजबूत करने का आह्वान किया, जो भारत के सभ्यतागत मूल्यों के मूल पहलू हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति में त्यौहारों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को प्रकृति की उदारता को मनाने, परिवारों को एक साथ लाने और समाज में शांति व सद्भाव लाने में अनेक त्योहारों की विशिष्टता को समझना चाहिए। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आखिर विद्याश्रम की ज़रूरत भारत में क्यों? बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति और सभ्यतागत मूल्यों के मुख्य पहलू हैं तथा युवाओं को भारतीय सभ्यता, संयुक्त परिवार सहित संस्कृति त्यौहारों और आध्यात्मिक आस्था के प्रति एक अभियान चलाकर जागृत करना तत्काल एक ज़रूरी है।

FASHION जोन

ट्रेडिशनल फैब्रिक, एम्ब्रॉयडरी, प्रिंट्स को मॉडर्न अंदाज में पहनना इन दिनों टीनएजर्स की पहली पसंद बनता जा रहा है. यही वजह है कि ज्यादातर डिजाइनर्स फ्यूजन वियर पर काफी एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं.

फ्यूजन वियर के स्टाइल मंत्रा

एथनिक ड्रेसेस और ज्वेलरी

एथनिक ड्रेस में लांग इवनिंग ड्रेस, शॉर्ट कुर्ती, रॉ सिल्क की साड़ी आदि को पार्टी-फंक्शन में पहनकर गॉर्जियस नजर आ सकते हैं. वहीं फेस्टिव मूड के लिए रॉ सिल्क, गोल्ड वर्क वाली कोटा साड़ी आदि ट्राई की जा सकती हैं. ट्रेडिशनल फैब्रिक और मॉडर्न एम्ब्रॉयडरी के कॉम्बिनेशन से स्मार्ट पार्टी वियर्स तैयार कर सकते हैं. एथनिक साड़ी के साथ मॉडर्न डिजाइनर ब्लाउज पहनकर सबसे अलग और स्पेशल नजर आ सकते हैं. एथनिक आउटफिट्स के साथ डल गोल्ड, सिल्वर, जूट, टेराकोटा आदि की ज्वेलरी ज्यादा खूबसूरत लगती है. आजकल हैवी ज्वेलरी लोगों को पसंद नहीं आतीं, इसलिए कोई एक स्ट्रांग एलिमेंट रखकर ज्वेलरी को एथनिक लुक दिया जा सकता है.

टीनएजर्स की पसंद ब्राइट कलर

मॉडर्न कट्स, अच्छा फॉल और खूबसूरत एम्ब्रॉयडरी वाले एथनिक वियर्स यंगस्टर्स के बीच काफी पॉपुलर हो रहे हैं. एथनिक आउटफिट पर ज्योमेट्रिक प्रिंट्स, स्ट्राइप्स, कैरी प्रिंट्स, गणेश, शिव, कृष्ण भगवान की प्रतिमा या फिर श्लोक आदि टीनएजर्स को बहुत पसंद आते हैं. ब्राइट कलर के ट्रेंडी एथनिक वियर्स इन दिनों ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं. कांथा, इकत, आरी, मिरर, एप्लीक आदि वर्क एथनिक वियर्स को न्यू लुक देते हैं. टीनएजर्स को एथनिक शॉर्ट ड्रेस, शॉर्ट कुर्ती, टीशर्ट, स्कर्ट आदि बहुत पसंद आते हैं.

SMART जोन

इन दिनों बाजार में रंग-बिरंगी और फैशनेबल चूड़ियों का बोलबाला है. कांच की चूड़ियों के अलावा मेटल और लाख की बनी चूड़ियों को भी काफी पसन्द किया जा रहा है. चूड़ियों को बदलते फैशन के साथ-साथ नये रंग-रूप में तब्दील करके बाजार में पेश किया गया है.

चूड़ियों ने बदला रूप

स्टोन वर्क

इन दिनों स्टोन वर्क वाली कांच की चूड़ियां और लाख की चूड़ियां फैशन में इन हैं. इन चूड़ियों को डायमंड शेप और स्क्वायर शेप वाले स्टोन से सजाया गया है. साथ ही झुमके वाली चूड़ियां भी फैशन पर राज कर रही हैं. इन चूड़ियों में रंगीन मोती के वर्क वाले झुमके को इस तरह जोड़ा गया है कि चूड़ियों की खूबसूरती देखते ही बनती है.

ब्लैक मेटल की चूड़ियां, मोटे कंगन

कॉलेज गोइंग गर्ल को ब्लैक मेटल की चूड़ियां और मोटे कंगन भा रहे हैं. चूड़ियों के ब्रेसलेट में मेटल, कांच और प्लास्टिक की सर्वाधिक मांग है. इसमें मोती और नग लड़कियों की पहली पसंद बने हुए हैं.

दबके और किरकिरी का प्रयोग

कांच की चूड़ियों की खूबसूरती बढ़ाने के लिए उन पर दबके और किरकिरी का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है. दबके के सिल्वर, गोल्ड और कॉपर कलर को चूड़ियों पर ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है. क्योंकि दबके के इन रंगों से चूड़ियों की चमक बढ़ जाती है.

फाइबर के रंगीन टुकड़े और नग

इसके अतिरिक्त कांच की चूड़ियों पर फाइबर के रंगीन टुकड़ों तथा रंगीन नगों का भी प्रयोग इन्हें आर्कषक बनाने में किया जाता है. आजकल नग, मोती तथा स्टोन का प्रयोग अधिकाधिक किया जा रहा है.

KITCHEN टिप्स

- करेले में घिसा हुआ प्याज और सूखे मसाले भरकर बनाएं. स्वादिष्ट करेले बनेंगे.
- करेले में सौंफ, मेथी दाना, राई दरदरा कर नमक, मिर्च, हल्दी, अमचूर में मिला कर भरें.
- खीर बनाते समय दूध यदि पतला या कम लगे तो थोड़ा-सा चावल पीस कर मिला दें.
- बची हुई बर्फी को दूध में मिलाकर उसकी आइसक्रीम बना सकते हैं.
- दूध गरम कर, उसमें एक हरी मिर्च धो कर डाल दें और इसे गरम स्थान पर रखें. रात भर में अच्छा दही जमेगा.
- बची हुई चाशनी से मीठे चावल या हलवा बना सकते हैं.
- कस्टर्ड बनाते समय यदि शक्कर के साथ थोड़ा शहद भी मिलाया जाए तो उसका स्वाद दोगुना हो जाएगा.

HAIR केयर

अच्छी सेहत के लिए कच्ची सब्जियां और इसका जूस पीना बहुत ही फायदेमंद रहता है. इससे आप अपने बालों को घना, काला और शाइनी भी बना सकते हैं. हेयर एक्सपर्ट्स मानते हैं कि कुछ खास किस्म के फल, सब्जी आदि को खाने से बालों की ग्रोथ बढ़ती है. इसके अलावा इनका जूस पीना भी बालों की सुंदरता के लिए फायदेमंद होता है.

बालों की उम्र बढ़ाते हैं जूस

एलोवेरा

एलोवेरा स्किन से लेकर बालों तक हीलिंग का काम करता है. एलोवेरा जूस पीना समूचे शरीर के लिए फायदेमंद होता है. यह स्किन को सॉफ्ट बनाता है. बालों को मजबूत, घना और चमकदार बनाने के लिए आप एलोवेरा जूस पीजिए. एलोवेरा की पत्तियों में विटामिन सी, ई और बीटा कैरोटीन, विटामिन B_1, B_2, B_3, B_6 के अलावा कॉपर, जिंक और आयरन पाए जाते हैं. एलोवेरा बॉडी की इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मददगार होता है. कई ऐसे मामले देखे गए हैं कि जिसमें बालों के झड़ने की वजह कमजोर इम्यूनिटी होती है.

स्ट्रॉबेरी रसीला और विटामिन्स से भरपूर टेस्टी फल है. इसे खाने से इम्यून सिस्टम मजबूत बनता है और हेयर फोलिकल भी सुरक्षित रहते हैं. इसे खाने से बाल मजबूत, घने और मुलायम बनते हैं और यह बालों का नेचुरल कलर बरकरार रखने में मदद भी करता है.

कीवी

कीवी विटामिन सी का खजाना है. विटामिन सी को बेहतरीन एंटी-ऑक्सीडेंट माना गया है. यह बालों को धूप, धूल और पोल्यूशन से सुरक्षा प्रदान करता है, जो बाल गिरने की सबसे बड़ी वजह माने जाते हैं. कीवी को खाने से बॉडी की इम्यूनिटी मजबूत बनती है. इसमें फ्लेवोनोइड्स और कैरोटीनोइड्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं. इसमें कॉपर और मिनरल्स भी अच्छी मात्रा में होते हैं जो बालों के पिगमेंटेशन के साथ ही उनके ग्रोथ को बढ़ाने के लिए जरूरी है.

INTERIOR जोन

खूबसूरत हो सपनों का आशियाना

यदि आप घर खरीदने का प्लान बना रहे हैं तो जेहन में सबसे पहला सवाल यही आता है कि घर खरीदते समय किन बातों का ख्याल रखना है. घर चाहे आप किसी बिल्डर से खरीदें या जमीन लेकर उसे खुद बनवाएं. कुछ ऐसी मूलभूत चीजें हैं जिनके बारे में हमें खास ध्यान देना होगा.

रोशनी

फ्लैट खरीदना हो या बना बनाया घर लेना हो, घर खरीदते समय सबसे पहली चीज जिस पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए, वो है घर में रोशनी की व्यवस्था कैसी है? घर ऐसा खरीदें जिसमें रोशनी की सही व्यवस्था हो, क्योंकि ऐसा घर हमारे स्वास्थ्य और सुखद जिंदगी के लिए फायदेमंद है.

दरवाजे-खिड़की के शीशे

फ्लैट खरीदते समय इस बात का पूरा ख्याल रखें कि बालकनी और कमरे को अलग करने वाले स्पेस में अगर ग्लास का इस्तेमाल किया गया है तो वह ग्लास उत्तम क्वालिटी का होना चाहिए, जिससे आपको पूरी सुरक्षा मिल सके.

फ्लोरिंग

घर खरीदते समय उसकी फ्लोरिंग का भी अपना महत्व है. फ्लोरिंग ऐसी हो, जिसमें मेंटेनेंस की कम जरूरत हो, टायल्स और नेचुरल स्टोन घर की फ्लोरिंग को बड़ा दिखाते हैं. फ्लोरिंग ऐसी हो, जिसमें पैटर्न और बॉर्डर नहीं होने चाहिए; क्योंकि अकसर बॉर्डर फर्नीचर के कारण छिप जाते हैं. यदि आप घर में खुद वुडन फ्लोरिंग कराना चाहते हैं तो ऐसी कंपनी से फ्लोरिंग कराएं जो ज्यादा लंबी गारंटी दे. फ्लोरिंग ज्यादा डार्क नहीं होनी चाहिए क्योंकि इस पर पैरों के निशान ज्यादा और जल्दी पड़ते हैं. टॉयलेट और बालकनी के लिए भी ऐसी फ्लोरिंग हो, जिसकी साफ सफाई आसानी से की जा सके और फ्लोरिंग ज्यादा ग्लॉसी न हो. बाथरूम में जगह-जगह पानी न रुके.

दीवारें

यदि आपका बजट इसकी इजाजत दे तो घर की दीवारों पर ऐसा पेंट कराएं जिसे आसानी से साफ किया जा सके. दीवारों को सुंदर बनाने के लिए पीओपी का इस्तेमाल किया जाता है जिसमें छोटी बड़ी दरारें पूरी तरह ढक दी जाती हैं. दीवारों के लिए यदि आप वॉलपेपर का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो यह मान कर चलें कि थोड़े समय के बाद यह खराब हो जाते हैं और यह स्थाई नहीं होते. इसलिए इनमें ज्यादा खर्च न करें. घर की दीवारों के मामले में रंगों और टैक्स्चर के साथ प्रयोग करें. घर की दीवारें यदि टायल्स वाली हैं तो टायल्स बड़ी हों तो उनकी फिनिशिंग ग्लॉसी होती है. यदि आपको घर में धूल-मिट्टी ज्यादा परेशान करती है तो फर्नीचर को दीवारों में फिक्स न कराएं. क्योंकि इससे फर्नीचर के अरेंजमेंट के बदलाव करने में दिक्कत पेश आती है.

छत में पीओपी

पीओपी के द्वारा आजकल घर की छतों को इस तरीके से डिजाइन किया जाता है, जिनमें इसके भीतर ही लाइट फिक्स की जाती हैं. यह थोड़ी महंगी होती है लेकिन यह एनर्जी बचाने वाली होती है. पीओपी के द्वारा इस तरह की लाइटिंग व्यवस्था को ज्यादा मजबूत बना दिया जाता है. लेकिन घर की छत में पीओपी की डिजाइनिंग ऐसी होनी चाहिए जिनके कोने ज्यादा बड़े न हों. छत के पंखों की लोकेशन फर्नीचर के अनुकूल हो, न कि कमरे के अनुसार हो. रसोई और बाथरूम में पीओपी के भीतर बनी लाइटों की बजाय लाइटिंग की व्यवस्था ऐसी हो जहां आसानी से चीजों को देखा जा सके.

TICK टिक

हर घर में ऐसी कई चीजें मौजूद होती है जिससे दर्दनिवारक लेप तैयार किया जा सकता है. जिसे लगाने से दर्द छूमंतर हो जाता है.

घर पर बने लेप से भाग जाएगा दर्द

अदरक

अदरक के औषधीय गुणों के बारे में सभी जानते हैं. लेकिन साथ ही अदरक एक दर्दनिवारक दवा के रूप में भी काम करता है. इसे लगाने पर हल्की जलन होती है लेकिन यह सिरदर्द में बहुत ही लाभकारी होता है. यदि सिरदर्द हो रहा हो तो सूखी अदरक को पीसकर उसमें हल्का का पानी मिलाकर उसका लेप बना लें. इस लेप को अपने माथे पर लगाएं.

हल्दी

हल्दी में एंटीसेप्टिक और एंटीबायोटिक तत्व पाए जाते हैं. साथ ही इसमें दर्दनिवारक कर्क्यूमिन नामक तत्व पाया जाता है. यह तत्व चोट के दर्द और सूजन को कम करने में सहायक होता है. घाव पर या दर्द वाले स्थान पर हल्दी का लेप लगाने से वह ठीक हो जाता है.

तुलसी

तुलसी के पत्तों में बहुत सारे औषधीय तत्व पाए जाते हैं. तुलसी की पत्तियों और चंदन को बराबर मात्रा में मिलाकर लेप बना लें. इसे लेप को दर्द होने पर प्रभावित जगह पर लगाने से दर्द में राहत मिलती है.

सरसों का तेल और कपूर

कपूर और सरसों के तेल से नसों, पीठ, कमर और मांसपेशियों के दर्द शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं. 10 ग्राम कपूर और 200 ग्राम सरसों के तेल दोनों को कांच की शीशी में भरकर धूप में रख दें. कुछ दिनों के बाद जब यह दोनों चीजें मिलकर एक रस होकर घुल जाएं तो इस लेप की मालिश दर्द वाली जगह पर करें.

पेट दर्द से राहत दिलाता है हींग

हींग को दर्दनिवारक और पित्तवर्द्धक माना जाता है. छाती और पेट दर्द में हींग का बना लेप लगाना लाभकारी होता है. छोटे बच्चों के पेट में दर्द होने पर हींग को पानी में घोलकर पकाने और उसका लेप नाभि के चारों ओर लगाने से दर्द में राहत मिलती है.

जोड़ों का कष्ट दूर करे प्याज

प्याज सिर्फ खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता, बल्कि यह कई प्रकार के दर्द को भी दूर भगाता है. प्याज शरीर में जोड़ों के दर्द को दूर करने तथा सूजन को कम करने में काफी सहायक होता है. प्याज के रस को सरसों के तेल के साथ मिलाकर लेप बना लें. इस लेप को लगाने से जोड़ों के दर्द व सूजन में कमी आती है.

कमर दर्द में कारगर दालचीनी

दालचीनी पाउडर का लेप सिरदर्द से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा उपचार है. दालचीनी को पीस कर पाउडर बना लें. इस पाउडर में पानी मिलाकर पेस्ट तैयार करें. इस लेप को सिर पर लगाने से आपको तुरंत आराम मिलता है. दालचीनी कमरदर्द में भी फायदेमंद होती है. 2 ग्राम दालचीनी का पाउडर एक चम्मच शहद में मिलाकर दिन में दो बार कमर पर लगाने से कमर दर्द कम हो जाता है.

लहसुन

सरसों या नारियल के तेल में लहसुन की 3-4 कलियों को डालकर गर्म करें. इस तेल को तब तक गर्म करें जब तक लहसुन की कलियां काली न हो जाएं.

HEALTH जोन

वजन घटाने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि थोड़ा सा भी वजन कम करके ब्लड प्रेशर, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों, स्ट्रोक, रक्त में ग्लूकोज की बढ़ी मात्रा, अर्थराइट्स और स्लीप एप्निया के खतरे को काफी हद तक कम किया जा सकता है. वजन धीरे-धीरे कम करना चाहिए. खाने-पीने की आदतों में सुधार, एक्सरसाइज, दवाइयां और सर्जरी द्वारा वजन कम किया जा सकता है.

स्वस्थ रहना है तो वजन घटाएं

खानपान में करें बदलाव

अपने लाइफस्टाइल, उम्र और गतिविधियों के अनुसार प्रतिदिन कैलोरीज लें. इसके लिए क्रैश डाइटिंग न करें. शरीर में पोषक तत्वों की कमी से दूसरी और बीमारियां भी हो सकती हैं. रोज-रोज व्रत न करें. ज्यादा पानी पीकर भी आप वजन कम कर सकते हैं. ज्यादा समय तक भूखे न रहें. वसारहित कम कैलोरीज युक्त पोषक तत्वों से भरपूर भोजन लें.

पौष्टिक भोजन लें

सब्जियां, फ्रूट, अनाज और प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ जैसे बींस, लो फैट डेयरी प्रोडक्ट्स लें. इनमें पोषण और स्वाद दोनों होता है. जंक फूड की बजाय हेल्दी फूड लें.

वसा घटाएं

कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की तुलना में वसा में ज्यादा कैलोरीज होती हैं. फास्ट फूड, पेस्ट्री, रेड मीट, डेयरी प्रोडक्ट्स, तेल, मक्खन, सलाद ड्रेसिंग, मेयोनीज और नट्स में वसा ज्यादा होती है, इन्हें कम खाएं.

कार्बोहाइड्रेट हो सही

हमें अपने भोजन में 45 से 65 प्रतिशत कैलोरीज कार्बोहाइड्रेट से मिलती है. चीनी, मीठे जूस जैसे कार्बोहाइड्रेट्स में कैलोरीज ज्यादा होती है. इसकी बजाय काम्प्लेक्स और ज्यादा फाइबर वाले कार्बोहाइड्रेट जैसे गेहूं की ब्रेड, पास्ता, ब्राउन राइस, ताजे फल और सब्जियां खानी चाहिए.

गिन कर कैलोरीज लें

खाद्य पदार्थ खरीदते समय उसके लेबल को जरूर पढ़ें. कई ऐसे फूड्स हैं जिनमें वसा तो कम होती है लेकिन कैलोरीज ज्यादा होती हैं. प्रोसेस्ड फूड में अक्सर फैट और शुगर ज्यादा होती है. चीनी से बने सॉफ्ट ड्रिंक कम से कम लें, इनमें कैलोरीज ज्यादा होती है.

एनर्जी फूड चुनें

हाई एनर्जी डेंस्ड फूड का मतलब है कम मात्रा में भी ज्यादा कैलोरीज होना. कम एनर्जी वाले फूड जैसे बंदगोभी को अगर आप काफी ज्यादा मात्रा में भी खाते हैं तो आप केवल थोड़ी ही कैलोरीज लेते हैं. कम एनर्जी फूड का चुनाव करें जिसमें ताजे फल और सब्जियां शामिल हों.

चीनी कम खाएं

जलेबी, खीर, केक, कुकीज, आइसक्रीम और फ्रोजन मीठे खाद्य पदार्थों को कम मात्रा में लें. इसकी बजाय ताजे फलों का जूस पीएं.

- एलीवेटर की बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करें.
- गाड़ी थोड़ा दूर पार्क करें और पैदल चलकर जाएं.
- अपने छोटे-छोटे कामों के लिए पैदल चलें या साइकिल का इस्तेमाल करें.
- दोपहर के भोजन के बाद पैदल चलें.
- बच्चों के साथ टीवी देखने की बजाय पार्क में जाकर खेलें.
- रात के भोजन के बाद सैर करें.
- घर के काम खुद करें. घर में झाडू पोंछा लगाएं और अपनी कार स्वयं धोएं.

एक्टिव रहें

अगर कैलोरीज कम करके आप वजन घटाते हैं, लेकिन शारीरिक रूप से कम एक्टिव रहते हैं तो इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता. एक्सरसाइज द्वारा कार्डियोवैस्कुलर और डायबिटीज को कंट्रोल कर सकते हैं.

फाइनेंशियल प्लानिंग में मैजिक

MONEY मैटर

भारत में ऐसी हाउसवाइफ की तादाद बहुत ज्यादा है जो अपने पति पर निर्भर हैं और किसी भी तरह के वित्तीय फैसलों में उनकी भागीदारी न के बराबर है. इसके बावजूद वह घर की मैनेजर होती हैं और उनकी जिम्मेदारी अपने घर के बजट को मैनेज करने की होती है. पिछले कुछ वर्षों में महंगाई तो बढ़ी है लेकिन उस अनुपात में सैलरी नहीं बढ़ी है. लेकिन कई बार जब घर में कोई इमर्जेंसी आती है जैसे, पति की जॉब छूट जाना या कोई हेल्थ प्रॉब्लम तो ऐसे वक्त में महिलाओं को फाइनेंशियल प्लानिंग ही काम आती है.

मनी फ्लो मैनेजमेंट

ज्यादातर घरों में हाउसवाइफ केवल ग्रॉसरी की खरीदारी तक ही सीमित हो जाती हैं. लेकिन हाउसवाइफ को इसके आगे बढ़ते हुए फाइनेंस को मैनेज करने का तरीका पता होना चाहिए. इससे पता चलेगा कि कहां ज्यादा खर्च करना है और कहां बचाना है. और यह कोई रॉकेट साइंस नहीं और न ही इसके लिए किसी एक्सपर्ट की सलाह की जरूरत है. आप इसे खुद से या अपने पति के सलाह से भी कर सकती हैं.

खर्च कंट्रोल करना

अब जब कोई मनी फ्लो मैनेजमेंट करना जान गईं हैं तो अब बारी है खर्चों पर कंट्रोल करने की, जैसे- अगर घर का बिजली का बिल 2000 हर महीने आता है तो आपको सोचने की जरूरत है कि कैसे इसे कम कर सकती हैं. अगर हर रोज वॉशिंग मशीन का इस्तेमाल करते हैं तो हफ्ते में 3-4 दिन ही इस्तेमाल करें. ऐसी ही कई चीजों का ध्यान रखकर आप खर्चों में कटौती कर सकते हैं.

बचत और सिर्फ बचत

हमेशा पैसों की बचत के बारे में सोचें. इसके लिए सबसे पहला कदम है एक अकाउंट खोलना. इसके अलावा सरकार की ओर से चलाई जा रही जीवन ज्योति जैसी तमाम तरह की योजनाओं में भी अपना रजिस्ट्रेशन करवा कर फायदा उठा सकते हैं.

घर बैठे कमाएं पैसे

अगर पढ़े लिखे हैं इसके बावजूद घर की जिम्मेदारियों के चलते अपने पति की कोई मदद नहीं कर पा रही हैं तो घर बैठे पैसे कमाने की तरकीब ढूंढना शुरू कर दें. फ्रीलांसर की तरह काम किया जा सकता है. इसके अलावा अगर किसी की पेंटिंग, डांसिंग, टीचिंग जैसी कोई हॉबी है तो इसके लिए अलग से क्लास चला सकती हैं और घर में क्लास लेकर पैसे कमा सकती हैं.

629 पदों पर फायरमैन भर्ती परीक्षा 29 जनवरी को

कड़ाके की सर्दी में जैकेट, ब्लेजर, शॉल-मफलर पर पाबंदी, बिना जेब वाली ही स्वेटर पहन सकेंगे

70 नंबर का रिटन एग्जाम, 60 नंबर का फिजिकल टेस्ट और 90 नंबर का प्रैक्टिकल होगा।

प्रैक्टिकल और फिजिकल के लिए रिटन में 33% नंबर जरूरी होंगे।

SC और ST कैटेगरी के लिए 28% नंबर अनिवार्य होंगे।

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की ओर से बढ़ते कोरोना संक्रमण के बीच 629 पदों के लिए 29 जनवरी को फायरमैन भर्ती परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। जिसमें प्रदेश के 1 लाख 50 हजार अभ्यर्थी शामिल होंगे। एग्जाम में अभ्यर्थियों को सवालों के साथ ही कड़ाके की सर्दी का भी सामना करना पड़ेगा। इसकी वजह है सरकारी ओर से जारी गाइडलाइन। गाइडलाइन के अनुसार अभ्यर्थी कोट, टाई, मफलर, जैकेट, जरकिन, ब्लेजर, पहनकर परीक्षा नहीं दे सकेंगे। ऐसे में अभ्यर्थी सर्दी से बचने के लिए सिर्फ शर्ट, बिना जेब वाली स्वेटर जिनमें बड़े बटन नहीं लगे हो वहीं पहन सकेंगे। इसके साथ ही महिला अभ्यर्थी भी हेट, स्टॉल, शॉल, मफलर पहनकर परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगी।

अभ्यर्थियों के लिए ये गाइडलाइन

ड्रेस कोड का पालन नहीं करने वाले अभ्यर्थियों को परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। परीक्षा के दौरान पानी की बोतल, पर्स, बैग, ज्योमैट्री, पेंसिल बॉक्स, प्लास्टिक पाउच, कैल्कुलेटर, तख्ती, पैड, गत्ता, पैन ड्राइव, रबर, टेबल स्कैनर, किताबें, नोटबुक, पर्चियां, व्हाइटनर लाने पर रोक रहेगी। इसके साथ ही डेढ़ घंटे पहले अभ्यर्थियों को परीक्षा केन्द्रों पर रिपोर्टिंग करने के साथ ही परीक्षा समय के बाद प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

दो पारी में होगी परीक्षा

29 जनवरी को दो पारी में आयोजित होने वाली भर्ती परीक्षा में फायरमैन परीक्षा सुबह पहली पारी 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक आयोजित होगी। जबकि एएफओ (असिस्टेंट फायर ऑफिसर) परीक्षा दूसरी पारी में दोपहर 2:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक आयोजित होगी। एडमिट कार्ड 21 जनवरी के बाद अपलोड किए जाएंगे। भर्ती परीक्षा में नेगेटिव मार्किंग नहीं होगी। ऐसे में कट ऑफ हाई रहने की संभावना है।

इस तरह से होगी परीक्षा

लिखित परीक्षा 70 अंकों की होगी। शारीरिक परीक्षा 60 अंकों की होगी। प्रायोगिक परीक्षा 90 अंकों की होगी। इस तरह से तीनों प्रकार की परीक्षाओं के अधिकतम अंक 220 होंगे। तीनों के अंकों के आधार पर मेरिट बनेगी।

33 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य

फायरमैन और असिस्टेंट फायर ऑफिसर (AFO) की भर्ती में लिखित और प्रैक्टिकल परीक्षा होगी। लिखित परीक्षा में न्यूनतम 33 फीसदी नंबर लाने वाले परीक्षार्थियों को ही फिजिकल और प्रैक्टिकल के लिए क्वालिफाइड माना जाएगा। वहीं, अनुसूचित जाति (SC) और जनजाति (ST) के परीक्षार्थियों के लिए 28 प्रतिशत अंक लाने अनिवार्य होंगे। फिजिकल और प्रैक्टिकल के लिए कैटेगरी वाइज कट ऑफ लिस्ट जारी की जाएगी।

अभ्यर्थियों को निर्धारित अंक प्राप्त करने पर शारीरिक और प्रायोगिक परीक्षा में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी। जबकि लिखित परीक्षा के बाद 1 पद के मुकाबले 10 अभ्यर्थियों को फिजिकल टेस्ट के लिए बुलाया जाएगा। परीक्षा में नेगेटिव मार्किंग नहीं होगी।

रोडा एक्ट में किसानों की जमीन नीलामी पर रोक

गहलोत बोले...

5 एकड़ तक जमीन नीलामी पर रोक वाले बिल को मंजूरी दे केंद्र

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। दौसा के रामगढ़ पचवारा में बैंक कर्ज नहीं चुकाने के कारण किसान की जमीन नीलाम करने के बाद हुए सियासी विवाद के बाद गहलोत सरकार हरकत में आई है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश भर में किसानों की जमीनों की नीलामी पर रोक लगा दी है। कॉमर्शियल सहित सभी तरह के बैंकों के रिमूवल ऑफ डिफिक्लटीज एक्ट (रोडा) के तहत कर्ज नहीं चुकाने पर किसानों की जमीन कुर्क और नीलाम करने पर तत्काल रोक लगा दी गई है।

दौसा के किसान की जमीन नीलाम करने के बाद देश भर में यह मामला चर्चा का मुद्दा बन गया था। किसान नेता राकेश टिकैत दौसा पहुंच गए थे। बीजेपी भी सरकार को किसान कर्जमाफी को लेकर घेर रही है। विवाद के बाद राज्य सरकार ने रामगढ़ पंचावारा के किसान की जमीन नीलामी कल ही रोक दी थी। अब आज प्रदेश भर में रोक लगा दी है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बयान जारी कर कहा- जमीन नीलामी रोकने के निर्देश दिए हैं। राज्य सरकार ने सहकारी बैंकों के कर्ज माफ किए हैं और भारत सरकार से आग्रह किया है कि कॉमर्शियल बैंकों से वन टाइम सेटलमेंट कर किसानों के कर्ज माफ करें। राज्य सरकार भी इसमें हिस्सा वहन करने को तैयार हैं। हमारी सरकार ने 5 एकड़ तक कृषि भूमि वाले किसानों की जमीन नीलामी पर रोक का बिल विधानसभा में पास किया था, लेकिन अभी तक राज्यपाल महोदय की अनुमति ना मिल पाने के कारण यह कानून नहीं बन सका है। मुझे दुख है कि इस कानून के ना बनने के कारण ऐसी नौबत आई। मैं आशा करता हूं कि इस बिल को जल्द अनुमति मिलेगी, जिससे आगे ऐसी नीलामी की नौबत नहीं आएगी।

गहलोत सरकार ने 31 अक्टूबर 2020 को किसान की 5 एकड़ तक की जमीन को नीलामी या कुर्क से मुक्त करने का बिल विधानसभा में पारित करवाया था। सिविल प्रक्रिया संहिता राजस्थान संशोधन विधेयक 2020 में किसान की 5 एकड़ तक की जमीन को किसी भी बैंक, संस्था से कुर्क या नीलाम करने पर पाबंदी का प्रावधान किया था।

इस बिल के साथ ही केंद्रीय कृषि कानूनों को बाईपास करने के लिए भी गहलोत सरकार ने तीन बिल पास किए। राज्यपाल की मंजूरी के लिए चारों बिलों को साथ ही भेजा गया था। कृषि कानूनों पर केंद्र राज्य के बीच विवाद के कारण राज्य के तीन कृषि बिलों के साथ चौथा बिल भी अटक गया। पिछले सवा साल से यह बिल मंजूरी का इंतजार कर रहा है।

किसानों की जमीन नीलाम नहीं होगी

बाड़मेर के विकास कामों के वर्चुअल शिलान्यास लोकार्पण कार्यक्रम में सीएम गहलोत ने कहा कि किसानों की जमीन नीलाम होने लग गई। मैंने गुरुवार सुबह ही निर्देश दिए हैं कि किसानों की जमीन नीलाम नहीं होगी। हमारी सरकार ने तीन काले कानूनों के समय अपने बिल बनाकर राज्यपाल के पास भेजे थे। इसमें एक बिल किसानों की 5 एकड़ जमीन नीलाम नहीं कर सकने का भी था। उस बिल को राज्यपाल ने केंद्र को भेजा होगा। उसे मंजूरी नहीं मिली है। केंद्र सरकार उस बिल को मंजूरी दे देगी तो यह कानून बन जाएगा। फिर किसान की 5 एकड़ तक की जमीन नीलाम करने की किसी एसडीओ या अफसर की हिम्मत नहीं होगी।

रीट पेपर लीक का मास्टरमाइंड भजनलाल गुजरात से गिरफ्तार

4 महीने से ढूंढ रही थी एसओजी, 3 साल पहले कॉन्स्टेबल भर्ती में भी पकड़ा गया था

फर्जी डिग्री का भी मास्टर माइंड

एसओजी की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि भजन लाल तीन साल पहले भी कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा में डमी कैंडिडेट बनकर बैठा था। इस दौरान उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। इतना ही नहीं भजनलाल फर्जी डिग्रियों का भी मास्टर माइंड है। अब तक की जांच में सामने आया है कि भजनलाल कई प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए फर्जी डिग्री बनाकर लोगों को दे चुका है। इसकी भी जांच SOG कर सकती है।

जयपुर। रीट पेपर लीक मामले एसओजी ने मास्टर माइंड भजनलाल विश्नोई को गुजरात से गिरफ्तार किया है। टीम गुरुवार को आरोपी को लेकर जयपुर पहुंची। बत्तीलाल समेत 20 आरोपियों की गिरफ्तारी के दौरान भजनलाल का नाम सामने आया था, तभी से स्ह्रत से ढूंढ़ रही थी। भजनलाल से पूछताछ में रीट पेपर लीक से जुड़े कई खुलासे होने की भी संभावना है। भजनलाल ने रीट का पेपर 30 से 40 लाख रुपए में अभ्यर्थियों को बेचा था। स्ह्रत की टीम पिछले 4 महीने से भजनलाल की तलाश में जुटी थी। एसओजी इंस्पेक्टर मोहनलाल पोसवाल लगातार राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात व उत्तरप्रदेश में दबिश दे रहे थे। इस बीच एसओजी को भजनाल के गुजरात में होने की सूचना मिली। टीम गुजरात पहुंची और भजनलाल को गिरफ्तार कर लिया। भजनलाल विश्नोई जालोर के रानोदर, चितलावना का रहने वाला है। गौरतलब है कि इसके बाद बत्तीलाल मीणा और पृथ्वीराज मीणा ने सवाईमाधोपुर और गंगापुरसिटी में कई अभ्यर्थियों को 10 से 12 लाख रुपये लेकर रीट का पेपर बेचा था।

थर्ड वेव में सबसे ज्यादा 75% संक्रमित युवा और अधेड़, 10-15 फीसदी बच्चे-बुजुर्ग हुए पॉजिटिव

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रदेश में कोरोना की तीसरी लहर में संक्रमण का खतरा सबसे ज्यादा यूथ और अधेड़ उम्र के लोगों को है। 20 से 59 साल तक उम्र के लोग कुल संक्रमितों के 75.30 फीसदी हैं। पढ़ने-लिखने और खेल-कूद के लिए घरों से बाहर निकलने वाले युवा, कर्मचारी, नौकरी करने वाले लोगों को सबसे ज्यादा खतरा बताया जा रहा है। । इसमें भी 20 से 29 साल उम्र के संक्रमित 26.08 फीसदी, 30 से 39 साल के 21.98 फीसदी, 40 से 49 साल के 15.15 फीसदी और 50 से 59 साल के 12.10 फीसदी लोग संक्रमित हुए हैं। राजस्थान में कोविड की तीसरी लहर की शुरुआत होने से पहले 1 नवम्बर से लेकर 17 जनवरी तक के आंकड़ों का एनालिसिस किया है। प्रदेश में 92 हजार 466 संक्रमित इस दौरान सामने आए। इसमें 60 हजार 237 पुरुष और 32 हजार 229 महिलाओं में कोविड पॉजिटिव रिपोर्ट आई।

0 से 19 साल उम्र के 14.72 फीसदी बच्चे संक्रमित: इसके बाद 0 से 19 साल उम्र के 14.72 फीसदी बच्चे,किशोर और युवा संक्रमित पाए गए हैं। 0 से 9 साल के 2.45 फीसदी, 10 से 19 साल के 12.27 फीसदी बच्चे,किशोर और युवा संक्रमित पाए गए हैं।

60 से 80 साल और प्लस उम्र के 9.98% बुजुर्ग संक्रमण की चपेट में: 60 से 80 साल और उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्ग 9.98 फीसदी संक्रमित पाए गए हैं। यानी बुजुर्गों में सबसे कम कोविड संक्रमण मिला है। 60 से 69 साल के 6.76 फीसदी, 70 से 79 साल के 2.60 फीसदी और 80 साल से ज्यादा के 0.62 फीसदी बुजुर्ग ही संक्रमित पाए गए।

जयपुर में 3, जोधपुर-बीकानेर में 2-2, जबकि 5 जिलों में 1-1 मौत: बुधवार को राजधानी जयपुर में 3, जोधपुर और बीकानेर में 2-2 मौत रिकॉर्ड हुई हैं। 5 जिलों अजमेर, अलवर, दौसा, कोटा और सीकर में 1-1 कोविड पॉजिटिव मरीजों की मौत हुई है। कोरोना से मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है।

पन्द्रहवी राजस्थान विधानसभा का सप्तम अधिवेशन 09 से

जयपुर। पन्द्रहवी राजस्थान विधानसभा के सप्तम अधिवेशन को बुधवार 9 फरवरी को प्रातः 11.00 बजे राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने आहूत किया है । इस संबंध में राजस्थान विधान सभा के सचिव श्री महावीर प्रसाद शर्मा द्वारा राजस्थान राजपत्र में अधिसूचना प्रकाशित करवाई गई ।

राहुल गांधी से लेकर अशोक गहलोत तक कांग्रेस के नेता देश के विपरीत भाषा बोलते हैं : डॉ. सतीश पूनियां

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर पलटवार करते हुए कहा कि, आज ब्रह्माकुमारीज के वर्चुअल कॉन्फ्रेंस में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की ताकत, लोकतंत्र, सद्भाव, एकता और देश की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की।

दूसरी ओर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत आदतन अपने ही देश के खिलाफ, अपने देश की व्यवस्था के खिलाफ देश के यशस्वी प्रधानमंत्री की निंदा की आड़ में अशोक गहलोत भूल जाते हैं कि वह देश पर सवाल खड़े करते हैं, अहिंसा और लोकतंत्र की बात करते-करते अशोक गहलोत भूल जाते हैं कि 70 वर्षों की राजनीति में कांग्रेस को 50 वर्षों तक शासन करने मौका मिला, जिसमें उन्होंने लोगों को जाति, पंथ और मजहब में बांटने का कार्य किया। आपातकाल से लेकर अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग कांग्रेस के कार्यकाल में हुआ, जब कांग्रेस के नेता विश्व मंच पर देश की आलोचना करते हैं तो ऐसा लगता है कि राहुल गांधी से लेकर अशोक गहलोत तक एक ही भाषा बोलते हैं, देश के विपरीत भाषा बोलता हैं, देश के खिलाफ भाषा बोलते हैं, इसलिए उनका आचरण कई बार एंटी नेशनल लगता है, देश के विपरीत लगता है।

भगवान परशुराम जी की 111 फीट की प्रतिमा लगाने हेतु जेडीए से निशुल्क जमीन की मांग को लेकर आज महासभा का प्रतिनिधि मण्डल जेडीसी से मिला

जयपुर। सर्व ब्राह्मण महासभा द्वारा जयपुर में भगवान परशुराम पीठ की स्थापना और 111 फीट भगवान परशुराम की मूर्ति लगाने हेतु जेडीए से निशुल्क जमीन लेने की मांग को लेकर आज सर्व ब्राह्मण महासभा का प्रतिनिधि मण्डल जेडीसी गौरव गोयल से मिला और अपना ज्ञापन प्रस्तुत किया। सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने बताया कि सर्व ब्राह्मण महासभा ने विश्व की सबसे बड़ी 111 फीट भगवान परशुराम की मूर्ति लगाने का निर्णय लिया है। जिसमें परशुराम जी की मूर्ति के साथ-साथ भगवान परशुराम पीठ की स्थापना भी की जायेगी। जिसमें कि सनातन ज्ञान, आध्यात्मिक चिंतन, वेद-विज्ञान पर चर्चा व शोध व अनुसंधान का उत्तरी भारत का प्रमुख स्थल बनायेगें। साथ ही ''परशुराम मेमोरियल'' की स्थापना भी की जायेगी। यह भगवान परशुराम पीठ एक सांस्कृतिक उत्थान के केन्द्र के रूप में बनेगी। जिसके माध्यम से ना केवल जयपुर वरन पूरे विश्व के लोग इससे जुड़ेगें। इससे पर्यटन को भी लाभ मिलेगा। क्योंकि इतनी बड़ी विशाल मूर्ति लगने पर इसे देखने के लिए लाखों लोग हर वर्ष आयेगें।

वॉइस-ओवर फील्ड में दमदार आवाज़ वालों का बोलबाला

जरूरी स्किल व एजुकेशन

वॉइस-ओवर आर्टिस्ट बनने के लिए एकमात्र प्रमुख मानदंड अच्छी आवाज होना है. हालांकि, यह आपको बहुत आसान लग सकता है, लेकिन जब एक वीडियो या एक चरित्र के लिए वॉइस-ओवर करने की बात आती है तो चीजें मुश्किल लगने लगती हैं. इसलिए एक अच्छी आवाज के साथ विभिन्न प्रकार के वॉइस मॉड्यूलेशन पर नियंत्रण वॉइस-ओवर आर्टिस्ट बनने के लिए प्राथमिक आवश्यकताएं होती हैं. साथ ही साथ आपको भाषा और व्याकरण का अच्छा ज्ञान होना चाहिए और उच्चारण पर उचित नियंत्रण. इसके लिए किसी खास एजुकेशन क्वालिफिकेशन की जरूरत नहीं पड़ती है. इसके लिए आप कुछ अभिनय पाठ्यक्रम का चुनाव कर सकते हैं, जहां से आपको एक अभिनय की डिग्री प्राप्त हो सके, क्योंकि वॉइस-ओवर काम का एक बड़ा हिस्सा अनिवार्य रूप से अभिनय कार्य ही है.

कोर्स व कॉलेज

वॉइस-ओवर नए जमाने का बढ़ता हुआ करिअर विकल्प है. इसके लिए अभी कोई ऐसा स्थापित कॉलेज नहीं है जो वॉइस-ओवर कलाकारों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करते हैं. लेकिन पिछले कुछ वर्षों में कई निजी संस्थानों ने वॉइस-कोचिंग पाठ्यक्रम पेश करना शुरू कर दिया है, जो छात्रों को मूल बातें सीखने में मदद करते हैं. इनमें प्रमुख रूप से इंडियन वॉइस-ओवर मुंबई, फिलमिट अकादमी मुंबई और वॉइस बाजार मुंबई का नाम आता है. वहीं आजकल बहुत से फिल्म मेकिंग इंस्टीट्यूट और मीडिया इंस्टीट्यूट वॉइस-ओवर आर्टिस्ट या डबिंग आर्टिस्ट जैसे कोर्स करवाते हैं. इन कोर्स की अवधि 3 से 6 माह होती है. कोर्स के दौरान, वॉइस मॉड्यूलेशन, लिपसिंग, वॉइस प्रोनाउंस, वॉइस एक्सप्रेशन आदि के बारे में सिखाया जाता है.

वॉइस-ओवर को ऑफ-कैमरा या ऑफ-स्टेज कमेंट्री के रूप में भी जाना जाता है. आज के समय में जिस तरह से दूसरी भाषाओं की फिल्में, एनिमेशन और कार्टून हिंदी या अन्य लोकल भाषा में रिलीज हो रहे हैं, उसने वॉइस-ओवर के दायरे को बढ़ा दिया है.

क्या है वॉइस-ओवर

आज के समय में वॉइस-ओवर का उपयोग रेडियो, टेलीविजन उत्पादन, फिल्म निर्माण, थिएटर और प्रेजेंटेशन जैसी हर जगह हो रहा है. वॉइस-ओवर को प्राय: किसी मौजूदा संवाद के बाद जोड़ा जाता है. यह पेशेवर ऑडियो के एक भाग के रूप में आवाज प्रदान करने के लिए उपयोग में लाया जाता है. यह गेमिंग, वीडियो, कार्टून, विज्ञापनों आदि के लिए इस्तेमाल किया जाता है. तकनीकी रूप से कहा जाए तो वॉइस-ओवर आर्टिस्ट की मुख्य जिम्मेदारी लिखित शब्द को ऑडियो या वॉइस में बदलना है. इसके लिए बोलने और संवाद की कला प्रमुख है. हम पूरे दिन कई आवाजें सुनते हैं, चाहे वह मेट्रो रेल घोषणाएं हों, विज्ञापन अभियान हो या फिर फोन पर दिशा-निर्देश देने वाली आवाज. ये वॉइस-ओवर आर्टिस्ट होते हैं.

करिअर ऑप्शन

आज के समय में मनोरंजन, विज्ञापन, कॉर्पोरेट, ई-लर्निंग, एनीमेशन, प्रशिक्षण, विपणन, शिक्षा, रेडियो और अन्य कार्यक्षेत्रों में वॉइस-ओवर कलाकारों की मांग बढ़ रही है. इसके अलावा, उन्नत प्रौद्योगिकी ने वीडियोगेम, एप, जीपीएस, टेक्स्ट टू स्पीच, इंटरनेट जैसे कई क्षेत्रों में इनकी मांग को और अधिक बढ़ा दिया है. यहां पर आप शानदार करिअर बना सकते हैं. इस फील्ड में करिअर बुनियादी वॉइस-ओवर गतिविधियों से शुरू होता है या रेडियो जिंगल्स के लिए आपकी आवाज की पेशकश करता है. एक बार सफल और स्थापित होने के बाद आप फिल्मों और टीवी शो या कार्टून शो के लिए डबिंग जैसे उच्च मूल्य वाले प्रोजेक्ट भी ले सकते हैं.

करिअर बनाने के लिए कोई कोर्स या फिर डिग्री लेना जरूरी नहीं है, बल्कि हुनर के दम पर किसी भी फील्ड में शानदार करिअर बनाया जा सकता है. इसी तरह से टूरिस्ट गाइड का काम है, जो सिर्फ अपने तजुर्बे और इतिहास की जानकारी रखते हुए केवल ज्ञान के दम पर टूरिस्ट को घुमाते हैं और काफी अच्छा पैसा भी कमा लेते हैं. कई बार कुछ लोग परिस्थितियों के चलते ज्यादा शिक्षित नहीं हो पाते हैं तो वे भी टूरिस्ट गाइड बनकर अपना बेहतर करिअर बना सकते हैं. इसके लिए किसी डिग्री की भी जरूरत नहीं है, केवल कुछ महीनों का डिप्लोमा कोर्स तथा अपने आसपास के शहरों की अच्छी जानकारी होना जरूरी है.

बिना डिग्री भरें उड़ान

गाइड बनने वाले इच्छुक लोग यदि किसी अच्छे संस्थान से टूरिज्म ट्रैवल एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट का कोर्स कर सकते हैं तो इसमें करिअर की संभावनाएं और भी ज्यादा बढ़ जाती हैं. कई एजेंसिया इसके लिए वैकेंसी निकालती हैं और एक अच्छे पैकेज पर गाइड हायर करती हैं, जिसमें आसानी से मौका मिल सकता है. इसके अलावा अपनी खुद की भी छोटी कंपनी खोल सकते हैं.

3 से 6 माह का डिप्लोमा कोर्स

गाइड के कोर्स के लिए देशभर में कई इंस्टीट्यूट्स हैं जो 3 से 6 महीने का डिप्लोमा कोर्स करवाते हैं. ऐसे कोर्स करके कोई भी आधिकारिक तौर पर एक गाइड के रूप में काम कर सकता है. इसमें टूरिस्ट्स के साथ बात करने के तरीके भी सिखाए जाते हैं. इसके अलावा एक टूरिस्ट गाइड में पेशंस, पंक्चुअलिटी, फ्रेंडली नेचर और गुड डिसिजन मेकिंग भी होना चाहिए.

रोचक जानकारी हासिल करें

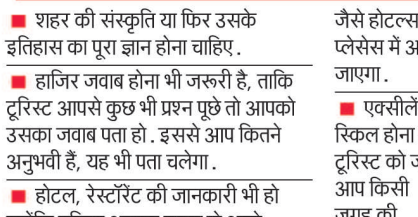

किसी सैलानी को शहर के इतिहास और वहां की हिस्टॉरिक चीजें जानने में रुचि होती है, खासतौर से किसी जगह से जुड़ी रोचक कहानी या कोई किंवदंती. किसी टूरिस्ट को कोई स्थान अच्छा और रोचक लगता है तो वह बार-बार उस स्थान में घूमने की इच्छा रखता है. दूसरों से बेहतर और विश्वसनीय जानकारी देने वालों की डिमांड ज्यादा होती है.

होनी चाहिए ये खूबियां

- शहर की संस्कृति या फिर उसके इतिहास का पूरा ज्ञान होना चाहिए.
- हाजिर जवाब होना भी जरूरी है, ताकि टूरिस्ट आपसे कुछ भी प्रश्न पूछे तो आपको उसका जवाब पता हो. इससे आप कितने अनुभवी हैं, यह भी पता चलेगा.
- होटल, रेस्टॉरेंट की जानकारी भी हो क्योंकि टूरिस्ट अक्सर गाइड से अच्छे होटल्स और रेस्टॉरेंट की जानकारी लेते हैं, इसलिए होटल्स-रेस्टॉरेंट की जानकारी होनी जरूरी है.
- अनुभवी होना जरूरी है. जितना ज्यादा अनुभव होगा, उतना ही आपको अन्य विभागों जैसे होटल्स या हिस्टोरिकल प्लेसेस में अपॉइंट किया जाएगा.
- एक्सीलेंस कम्युनिकेशन स्किल होना फायदेमंद है. टूरिस्ट को जब आप किसी जगह की जानकारी दें तो कम्युनिकेशन स्किल अट्रैक्टिव होनी चाहिए.

यहां करें अप्लाई -
- होटल्स
- वाइल्ड सेंचुरी
- टूरिज्म इंडस्ट्री
- ट्रांसपोट्रेशन
- म्यूजियम
- हिस्टोरिकल प्लेस

चाय की दुकान में पढ़कर बने IAS

हर साल यूपीएससी परीक्षा के बाद उसमें सफल हुए उम्मीदवारों की सक्सेस स्टोरी ट्रेंड करती हैं. कई बार कुछ उम्मीदवारों की कहानी इतनी प्रेरक होती हैं कि उसे सुनकर विश्वास करना ही मुश्किल हो जाता है. यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2019 में 304वीं रैंक हासिल करने वाले आईएएस हिमांशु गुप्ता की कहानी भी कुछ ऐसी ही है.
किसी भी परीक्षा में सफल होने के लिए दृढ़निश्चयी होना जरूरी होता है. परीक्षा को पास न कर पाने के कई बहाने हो सकते हैं लेकिन हर मुश्किल से ओवरकम करके उसे पार कर जाने वाले को सफलता जरूर हासिल होती है. आईएएस हिमांशु ने बरेली के एक छोटे से कस्बे में रहते हुए यूपीएससी परीक्षा की तैयारी की थी. उनके पिता चाय की दुकान लगाते थे और उन्होंने वहीं बैठकर परीक्षा की तैयारी की.

3 बार दी यूपीएससी परीक्षा

हिमांशु ने 3 बार यूपीएससी परीक्षा दी थी. पहली बार में रैंक के हिसाब से उन्हें इंडियन रेलवे सर्विस में नियुक्त किया गया था, अगले प्रयास में वे आईपीएस के पद तक पहुंचे थे और फिर साल 2019 में बेहतर रणनीति और तैयारी के साथ वे 304वीं रैंक हासिल कर आईएएस ऑफिसर बन गए.

कहीं से भी कर सकते हैं तैयारी

यूपीएससी परीक्षा की तैयारी करने के लिए बड़े शहर जाने की कोई जरूरत नहीं होती है. हिमांशु गुप्ता के ट्रैक रिकॉर्ड से तो यही सीख मिलती है. अगर आप चाहें तो ऑनलाइन पढ़ाई करके कहीं से भी सफलता हासिल कर सकते हैं.

पिता की दुकान पर लिया फैसला

हिमांशु गुप्ता के पिता की चाय की दुकान है. हिमांशु वहीं बैठकर रोजाना अखबार पढ़ा करते थे. अखबार पढ़ने के दौरान ही उनके अंदर यूपीएससी परीक्षा को पास करने की अलख जाग उठी. परीक्षा की तैयारी के लिए दिल्ली जाने के बजाय उन्होंने डिजिटल रूप से वहीं से पढ़ाई करने का फैसला किया. उनका यह फैसला बिल्कुल सही भी साबित हुआ.

पीएचडी प्रोग्राम्स के लिए जेईएसटी 2022

पीएचडी/इंटीग्रेटेड पीएचडी प्रोग्राम इन फिजिक्स थ्योरिटिकल कम्प्यूटर साइंस और न्यूरोसाइंस या कंप्यूटेशनल बायोलॉजी में एडमिशन पाने के लिए जॉइंट एंट्रेंस स्क्रीनिंग टेस्ट 2022 के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है. जॉइंट एंट्रेंस स्क्रीनिंग टेस्ट 2022 (जेईएसटी 2022) में देशभर से कुल 33 संस्थान हिस्सा ले रहे हैं. इन सभी संस्थानों के पीएचडी/इंटीग्रेटेड पीएचडी प्रोग्राम में प्रवेश पाने के इच्छुक आवेदकों को जेईएसटी 2022 का एग्जाम देना होगा. इस एग्जाम का आयोजन 13 मार्च 2022 को करवाया जाएगा. जो आवेदक अगस्त 2022 तक अपनी अंतिम परीक्षाएं पूरी कर लेंगे, वह भी जेईएसटी 2022 के लिए अप्लाई कर उसमें अपीयर हो सकते हैं. जेईएसटी के इच्छुक व योग्य आवेदक 18 जनवरी 2022 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं.

कैसे करें आवेदन

जॉइंट एंट्रेंस स्क्रीनिंग टेस्ट 2022 के जरिये पीएचडी/इंटीग्रेटेड पीएचडी प्रोग्राम इन फिजिक्स, थ्योरिटिकल कंप्यूटर साइंस और न्यूरोसाइंस या कंप्यूटेशनल बायोलॉजी में एडमिशन पाने के लिए इच्छुक व योग्य आवेदक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं.

क्या है योग्यता

जेईएसटी 2022 के तहत पीएचडी प्रोग्राम इन फिजिक्स में एडमिशन के लिए आवेदकों के पास एमएससी इन फिजिक्स की डिग्री होनी जरूरी है. वहीं, इस प्रोग्राम के लिए कुछ संस्थान एप्लाइड फिजिक्स और मैथेमेटिक्स में बीई/बीटेक/एमएससी/एमई/एमटेक की डिग्री भी स्वीकार करते हैं. आईएमएससी से थ्योरिटिकल कंप्यूटर साइंस करने के लिए आवेदकों के पास कंप्यूटर साइंस या संबंधित सब्जेक्ट्स में एमएससी/एमई/एमटेक की डिग्री होनी जरूरी है. एनबीआरसी से पीएचडी इन न्यूरोसाइंस के लिए आवेदकों के पास फिजिक्स/मैथेमेटिक्स में एमएससी और कंप्यूटर साइंस में बीई/बीटेक/एमसीए की डिग्री होनी अनिवार्य है. आईएमएससी से पीएचडी इन कंप्यूटेशनल बायोलॉजी करने के लिए आवेदकों के पास किसी भी इंजीनियरिंग या साइंस सब्जेक्ट में एमएससी/ एमई/ एमटेक/ एमसीए की डिग्री होनी चाहिए. आईएमएससी से इंटीग्रेटेड पीएचडी प्रोग्राम इन थ्योरिटिकल कंप्यूटर साइंस करने के लिए विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर है.

ऑनलाइन अपस्किलिंग कोर्स से करिअर को मिलेगा बूस्ट

कोरोना वायरस महामारी का सबसे ज्यादा असर लोगों के रोजगार पर पड़ा है. कई लोगों के पास कौशल क्षमता न होने की वजह से उन्हें अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है. ऐसे में अपस्किलिंग कोर्स की डिमांड काफी बढ़ गई है. यदि आप एक लम्बे गैप के बाद वापस नौकरी में जाना चाहते हैं तो आपके लिए ऑनलाइन अपस्किलिंग कोर्स सबसे बेस्ट ऑप्शन है. यह ऑनलाइन अपस्किलिंग कोर्स आपकी कौशल क्षमता को बढ़ाने में मदद करेंगे. प्रतिस्पर्धा के इस दौर में कुछ लोग अपनी पुरानी स्किल्स के हिसाब से चलते हैं, इसका सीधा असर उनकी सैलरी पर पड़ता है. यह अक्सर उन महिलाओं के मामले में होता है जो अपने मातृत्व अवकाश या अपने पारिवारिक कारणों से कुछ वर्षों के लिए अपनी नौकरी छोड़ देती हैं. ऐसे में आज अपस्किलिंग एक ऐसा प्राप्त करने योग्य लक्ष्य है, जो विभिन्न उद्योगों के शिक्षकों को अपनी पेशेवर दक्षता में सुधार करने और प्रासंगिकता हासिल करने के लिए शिक्षार्थियों से जोड़ता है. अपने करिअर को बूस्ट करने के लिए अपस्किलिंग ऑनलाइन कोर्स आपके काम आ सकता है.

डेटा साइंस कोर्स

डेटा सभी उद्योगों पर शासन करने वाला बड़ा भाई है. शीर्ष तकनीकी दिग्गजों से लेकर स्टार्टअप तक, आज हर कोई अपने व्यवसाय संचालन को अनुकूलित करने के लिए डेटा पर निर्भर है. एक डेटा विज्ञान पाठ्यक्रम न केवल आपको प्रासंगिक बनाएगा, बल्कि आपको वर्तमान समस्या का समाधान प्रदाता बनने में भी मदद करेगा. जबकि एक तकनीकी पृष्ठभूमि होने से मदद मिलती है, गैर-तकनीकी पृष्ठभूमि वाले लोग भी अतिरिक्त काम कर सकते हैं और इसका अधिकतम लाभ उठा सकते हैं.

डिजिटल मार्केटिंग

महामारी ने सभी को घर के अंदर ले लिया. शॉपिंग से लेकर बिजनेस चलाने तक सब कुछ डिजिटल हो गया. कंपनियों को अब ऐसे विपणक की आवश्यकता है जो ऑनलाइन अभियान बना सकें और अपनी ऑनलाइन उपस्थिति को बढ़ा सकें. डिजिटल मार्केटिंग में एक कोर्स रचनात्मक स्ट्रीक और मार्केटिंग अपील वाले लोगों के लिए उपयुक्त है, जो कंपनियों को नई डिजिटल दुनिया में गोता लगाने और महामारी के बावजूद सम्मानजनक आरओआई हासिल करने में मदद कर सकते हैं. एक डिजिटल मार्केटिंग कोर्स में आमतौर पर कंटेंट मैनेजमेंट, मार्केटिंग एनालिटिक्स, सोशल मीडिया मार्केटिंग और कुछ नाम रखने के लिए भुगतान किए गए विज्ञापन शामिल होते हैं. एक बार जब आप दक्षता हासिल कर लेते हैं तो आप आसानी से अपने खुद के व्यवसाय में परिवर्तित हो सकते हैं और वैश्विक ब्रांडों से जुड़ सकते हैं जो अपने डिजिटल कौशल में सुधार करना चाहते हैं.

सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनर कोर्स

शिष्टाचार कभी भी चलन से बाहर नहीं जाता है और पेशेवर हमेशा अपने प्रस्तुति कौशल, नेतृत्व गुणों और बहुत कुछ को बेहतर बनाने के तरीकों की तलाश में रहते हैं. यदि आपके पास लोगों का कौशल है तो एक सॉफ्ट स्किल-कोर्स आपके पेशेवर दायरे को और मजबूत करेगा और लोगों के जीवन में बदलाव लाने में मदद करेगा.

एंटरप्रेन्योरशिप 101

महामारी के कारण नौकरी छूट गई, लोगों ने अपना खुद का कुछ बनाने का अवसर देखा. नतीजतन, महामारी के बाद के स्टार्टअप्स का ढेर लग गया है. आप भी अपना कुछ निर्माण कर सकते हैं. उद्यमिता पर केंद्रित पाठ्यक्रमों के साथ, आप सही व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व, उत्पाद विकास तथा प्लेसमेंट, बिक्री व विपणन और बहुत कुछ सीखने के बारे में सीख सकते हैं.

ग्राफिक डिजाइनिंग कोर्स

यदि आपके पास एक लाख शब्दों को व्यक्त करने वाली तस्वीर को चित्रित करने की क्षमता है, तो आपको ग्राफिक डिजाइनिंग पाठ्यक्रम में खुद को निवेश करना चाहिए. कलात्मक प्रतिभा और ग्राफिक डिजाइनिंग पृष्ठभूमि वाले लोगों की अत्यधिक मांग है क्योंकि वे ऑनलाइन अनुभवों को बेहतर बनाने वाले हैं. आप चित्रण करना, मोशन डिजाइनिंग और बहुत कुछ सीख सकते हैं. ग्राफिक डिजाइनिंग कोर्स के साथ, आप एक संपन्न फ्रीलांस करिअर भी बना सकते हैं और बड़े ब्रांडों के साथ रचनात्मक तरीके से संदेश देने के लिए काम कर सकते हैं.

अगर आप एक कंटेंट क्रिएटर के तौर पर सफल होना चाहते हैं तो आपको अपने कंटेंट पर मेहनत करनी होगी. आपको स्पीड के साथ बेहतर कंटेंट देना होगा. इन तरीकों को अपनाकर कंटेंट देने की स्पीड बढ़ा सकते हैं.

कंटेंट क्रिएटर्स के लिए स्पीड है जरूरी

खुद का समय नोट करें

जल्दी लिखने का गुण अधिकतर प्रैक्टिस से आता है, इसलिए जरूरत है खुद का टाइम नोट करने की. जब भी किसी क्लाइंट से कोई कंटेंट राइटिंग का काम मिले तो उसे पूरा करने में कितना समय लगता है, वह नोट करें. इससे आप स्पीड को सुधारने की दिशा में काम कर सकते हैं.

खुद की ज्यादा कद्र करें

सफल होने के लिए जरूरी है कि आप अपनी कद्र करें. जब तक आप खुद अपने काम की कद्र नहीं करेंगे, तब तक दूसरे भी आपको कमतर ही आंकेंगे. जब खुद की कद्र करेंगे तो दूसरों से तुलना करने में समय बर्बाद नहीं करेंगे, जिससे काम समय पर पूरा हो पाएगा.

परफेक्शनिस्ट न बनें

याद रखें कि परफेक्ट बनने के चक्कर में आप पैसा बनाने की अपनी काबिलियत को कम कर देते हैं. इसका अर्थ यह है कि जब आपको कंटेंट से संबंधित कोई काम दिया जाए, तो सिर्फ एक बेहतर शब्द ढूंढ़ने में अपना सारा समय व्यर्थ न कर दें.

सफल एचआर मैनेजर में इन खूबियों का होना जरूरी

ऑफिस में एचआर मैनेजर का रोल बहुत अहम होता है. कंपनी के लक्ष्य के मुताबिक काम करने वाले कर्मचारी का चुनाव करने की जिम्मेदारी एचआर मैनेजर की ही होती है. इसलिए एक एचआर मैनेजर में कई ऐसी स्किल्स होनी जरूरी है जो कंपनी उनसे उम्मीद करती है.

सही कर्मचारी का चुनाव

कंपनी की कमाई का एक बड़ा हिस्सा कर्मचारियों की सैलरी में जाता है, इसलिए कंपनियां एचआर मैनेजर में ऐसे कर्मचारी की उम्मीद करती हैं जो कंपनी की उम्मीदों पर खरा उतरे. एक बेहतर कर्मचारी ही कंपनी को बेहतर आउटपुट देता है, इसलिए एचआर मैनेजर में सेलेक्शन की खूबी होनी जरूरी है.

कम्पेंसेशन

ऑफिस में कर्मचारियों के बीमार और घायल होने या दुर्घटना की स्थिति में कम्पेंसेशन देना भी एचआर मैनेजर का काम है. कॉर्पोरेट प्लान, विजन और पॉलिसीज तैयार करना भी इनकी जिम्मेदारी होती है. हर कंपनी इन जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से निभाने वाले एचआर मैनेजर्स की भर्ती करती है.

परफॉर्मेंस मैनेजमेंट

एचआर मैनेजर में कर्मचारियों की परफॉर्मेंस को जांचने व कंपनी के सामने उसे पेश करने का हुनर होना चाहिए.

मामलों को सुलझाना

एचआर मैनेजर का काम सिर्फ कर्मचारियों की भर्ती तक सीमित नहीं है. कर्मचारी या कंपनी से जुड़े विवादों को निपटाना होता है

एडमिशन ALERT

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, रोहतक, हरियाणा
कोर्स : डॉक्टोरल प्रोग्राम इन मैनेजमेंट
योग्यता : न्यूनतम 55 फीसदी मार्क्स के साथ पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री होनी अनिवार्य है.
चयन प्रक्रिया : क्वालिफाइंग एग्जाम और पर्सनल इंटरव्यू.
आवेदन की अंतिम तिथि : 31 जनवरी, 2022
इंटरव्यू की तारीख : 15-16 अप्रैल, 2022
रिजल्ट की घोषणा की तारीख : 25 अप्रैल, 2022
जॉइनिंग की तारीख : 6 जून, 2022
वेबसाइट : www.iimrohtak.ac.in

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, विशाखापट्टनम, आंध्रप्रदेश
कोर्स : ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (पीजीपी)
योग्यता : बैचलर्स डिग्री जरूरी है.
चयन प्रक्रिया : शैक्षणिक रिकॉर्ड, कैट 2021, स्कोर और पर्सनल इंटरव्यू
आवेदन प्रक्रिया की शुरुआत : 11 जनवरी, 2022
आवेदन की अंतिम तिथि : 15 मार्च, 2022
इंटरव्यू की तारीख : 11 अप्रैल - 11 मई, 2022
वेबसाइट : https://iimv.ac.in

राजस्थान में 532 मेडिकल ऑक्सीजन प्लांट में से 473 शुरू, जयपुर को 50 प्लांट देंगे साँसें

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में कोरोना की तीसरी लहर से निपटने के लिए प्रदेश सरकार ने अस्पतालों में ज्यादा से ज्यादा ऑक्सीजन प्लांट लगाने शुरू कर दिए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर वेरिएंट में म्युटेंट होकर यह घातक हुआ तो लोगों की जान बचाने में सबसे ज्यादा ऑक्सीजन सपोर्ट ही काम आएगा। एक्सपर्ट्स की राय और कोरोना की पहली और दूसरी लहर से सबक लेते हुए प्रदेश के सभी 33 जिला अस्पतालों और सभी मेडिकल कॉलेजों के अलावा प्राइवेट अस्पतालों में भी मेडिकल ऑक्सीजन प्लांट्स लगवाए जा रहे हैं।

मेडिकल विभाग के प्रमुख सचिव वैभव गालरिया ने बताया कि प्रदेश के 532 मेडिकल ऑक्सीजन प्लांट्स में से 473 शुरू हो गए हैं। बाकी के ऑक्सीजन प्लांट्स भी जल्द ही कमीशंड हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 40 हजार ऑक्सीजन कन्संट्रेटर और दूसरे ऑक्सीजन उपकरणों से 1050 मेट्रिक टन ऑक्सीजन उपलब्धता होने लगेगी। वैभव गालरिया ने कोविड ट्रीटमेंट

प्रोटोकॉल की पालना, लिक्विड मेडिकल ऑक्सीजन, ऑक्सीजन प्लांट्स की मॉक ड्रिल करने के भी निर्देश दिए हैं। कोविड की पीक वेव जैसे हालातों में किस तरह ऑक्सीजन सप्लाई मेंटेन रखी जाएगी। इस पर टीम को अभी से रिहर्सल वर्क करने को कह दिया गया है। ताकि भविष्य में किसी भी तरह के हालात से निपटा जा सके।

जयपुर के सीएमएचओ फर्स्ट डॉ नरोत्तम शर्मा ने दैनिक भास्कर से बातचीत में कहा कि राजधानी जयपुर में 25 ऑक्सीजन प्लांट सरकारी अस्पतालों और 25 प्लांट प्राइवेट अस्पताल में लगाए गए हैं।

राजस्थान सरकार, पीएम केयर, स्वयंसेवी संस्थाओं, भामाशाहों के सहयोग से ये ऑक्सीजन प्लांट्स अलग-अलग हॉस्पिटल्स में लगाए गए हैं। जयपुर में सबसे ज्यादा 5 ऑक्सीजन प्लांट और दो लिक्विड ऑक्सीजन स्टोरेज एंड सप्लाई सिस्टम आरयूएचएस कोविड डेडिकेटेड हॉस्पिटल में लगाए गए हैं।

डॉ नरोत्तम शर्मा ने बताया कि 5 हजार ऑक्सीजन कन्संट्रेटर सभी सीएचसी पर भेजे गए हैं। सीएचसी लेवल तक ऑक्सीजन सिलेंडर भी भेजे गए हैं। 8 हजार एक्सट्रा ऑक्सीजन सिलेंडर सीएमएचओ ऑफिस में एडिशनल स्टोर करके बैकअप के लिए रखे गए हैं। जयपुर में फिलहाल 20 अस्पतालों में कोविड मरीजों को भर्ती किया जा रहा है। कुल 127 अस्पतालों को कोविड की तीसरी लहर के मद्देनजर अटैच किए गए हैं। जिनमें 10 हजार बेड्स की व्यवस्था है।

हॉस्पिटल के सीनियर हैन्ड एवं माइक्रोवैस्कुलर सर्जन डॉ. गिरीश गुप्ता ने की दुर्लभ सर्जरी

इलाज के बाद भी टेढ़ा था मासूम का हाथ, नारायणा हॉस्पिटल के डॉक्टर्स ने रिवीजन सर्जरी कर दी नई आशा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। साढ़े तीन साल की किरण (परिवर्तित नाम) को शहर के डॉक्टर्स ने नई उम्मीद दी है। रेडियल क्लब हैंड (हाथ टेढ़ा होना) की जन्मजात विकृति से जूझ रही किरण अपने सीधे हाथ से सामान्य काम भी नहीं कर पाती थी। पहले अन्य हॉस्पिटल में सर्जरी कराने के बाद भी जब उसे फायदा नहीं हुआ तो शहर के नारायणा मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के डॉक्टर्स उसके लिए नई उम्मीद बनकर आए और दुर्लभ रिवीजन सर्जरी (रेडियलाइजेशन ऑफ अलना) कर उसका हाथ ठीक कर दिया। हॉस्पिटल के सीनियर हैन्ड एवं माइक्रोवैस्कुलर सर्जन डॉ. गिरीश गुप्ता ने यह दुर्लभ सर्जरी की।

एक साल की उम्र में हुई थी पहली सर्जरी

डॉ. गिरीश ने बताया कि बच्ची को रेडियल क्लब हैंड नामक विकृति थी जिसमें उसके सीधे हाथ में कोहनी से कलाई के बीच एक ही हड्डी विकसित हुई जो कि सामान्य बच्चों में दो होती हैं। इसमें रेडियस बोन अनुपस्थित थी जिसके कारण कलाई से उसका हाथ एक दिशा में गिर गया और गोल्फ स्टिक जैसा दिखने लगा था। इस स्थिति के कारण ही इस विकृति को रेडियल क्लब हैण्ड कहते हैं। करीब 1 साल की उम्र में उसकी अन्य अस्पताल में पहली सर्जरी हुई थी लेकिन नियमित फॉलोअप न लेने के कारण सर्जरी में ठीक की गई हड्डी बिखर गई और उसका हाथ वापस टेढ़ा हो गया।

दोबारा सर्जरी करना था बेहद मुश्किल

बच्ची के हाथ की दोबारा सर्जरी कर उसे सीधा करना बहुत मुश्किल था। डॉ. गिरीश ने बताया कि ढाई साल बाद बच्ची की दोबारा सर्जरी करने में कई जोखिम थे। उसकी कलाई में खून की एक ही नस थी जिसे बचाते हुए ठीक करना था। पहले एक बार सर्जरी होने के कारण उसके टिश्यू चिपके हुए थे जिसे दोबारा हटाकर ठीक करना बहुत चैलेंजिंग था। सर्जरी में हमने उसकी कलाई की ओर जा रही हड्डी को छोटा किया और हाथ की गोलाई को तार की सहायता से सीधा किया। इस सर्जरी में करीब साढ़े तीन घंटे का समय लगा। इस सर्जरी के बाद लगभग एक से डेढ़ साल तक ठीक की गई कलाई के स्थिर होने का इंतजार किया जाएगा और फिर अंतिम चरण में पोलिसाइजेशन सर्जरी की जाएगी जिसमें तर्जनी उंगली को अंगूठा बनाया जाएगा। अंतिम चरण की सर्जरी के बाद किरण का हाथ दूसरे बच्चों की तरह लगभग सामान्य काम करने लगेगा।

गहलोत मंत्रिपरिषद की रिव्यू मीटिंग में एक्सपर्ट्स बोले

मौतें कम पर हल्के में न लें, 12+ के सभी बच्चों के वैक्सीनेशन की सिफारिश

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रदेश में कोरोना के हालात को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मंत्रिपरिषद की रिव्यू बैठक खत्म हो गई। इसमें कोरोना कोर ग्रुप से जुड़े एक्सपर्ट्स ने प्रजेंटेशन दिया। मौजूदा हालातों पर मंथन के बाद सीएम अब एक बार फिर गाइडलाइन की समीक्षा करेंगे। गृह विभाग संशोधित कर नया ड्राफ्ट सीएम की मंजूरी के लिए रखेगा। इसके बाद एक दो दिन में नई गाइडलाइन जारी हो सकती है।

एक्सपर्ट्स ने बैठक के दौरान रेड जोन वाले इलाकों पर फोकस करते हुए गाइडलाइन की सख्ती से पालना की सलाह दी। कहा कि ओमिक्रॉन से अभी मौतें भले कम हो रही हैं, लेकिन इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। आईसीएमआर की गाइडलाइन की सख्ती से पालन करने पर जोर देना होगा। बैठक की शुरुआत में सीएम ने कहा कि ओमिक्रॉन के खतरे को देखते हुए सरकार ने कई पाबंदियां लगाई हैं। स्थानीय स्तर पर संबंधित विभाग समन्वय से काम करके गाइडलाइन का पालन करवाएं।

सर्दी-जुकाम वालों की प्राथमिकता से जांच की मांग

बैठक में बताया गया कि कुछ सप्ताह से पॉजिटिविटी दर लगातार बढ़ रही है। एक सप्ताह में यह दर 7.61 से बढ़कर 15.52 प्रतिशत हो चुकी है। संक्रमण की इस गति को रोकने के लिए जरूरी है कि आमजन द्वारा कोविड प्रोटोकॉल की निरंतर पालना की जाए। साथ ही संक्रमण को रोकने के लिए फोकस्ड सैम्पलिंग की जाए। जिन लोगों में सर्दी, खांसी, जुकाम के लक्षण हैं, उनकी प्राथमिकता से जांच की जाए। बैठक में सीएम सहित सभी मंत्रियों ने 12 साल से ज्यादा उम्र के सभी बच्चों को वैक्सीन लगाने की पैरवी की।

गहलोत बोले- ओमिक्रॉन के पोस्ट कोविड रिजल्ट पर स्टडी करें: बैठक में गहलोत ने कहा कि अभी तक किसी को यह पता नहीं है कि ओमिक्रॉन से संक्रमित होने के बाद पोस्ट कोविड इफेक्ट क्या हो सकते हैं। कोरोना के डेल्टा वैरिएंट में संक्रमित होने वालों को कई तरह के पोस्ट कोविड समस्याओं का सामना करना पड़ा। अभी तक किसी को ओमिक्रॉन के बाद के रिजल्ट के बारे में पता नहीं है। इसके रिजल्ट की स्टडी होना बहुत जरूरी है।

दूसरी शादी करने पर पंचों का तालिबानी फैसला

पत्नी व उसके दूसरे पति को पहले पति के परिवार ने रस्सियों से बांधकर 2 घंटे लाठियों से पीटा

उदयपुर। राजसमंद के एक गांव में पंचों के तालिबानी फैसले के तहत पति-पत्नी को गांव में सरेआम लाठी-डंडों में पीटा गया। दरअसल, महिला अपने पहले पति को छोड़ नाता प्रथा के तहत उदयपुर में दूसरे व्यक्ति के साथ रहने लगी थी। यह ससुराल वालों को सहन नहीं हुआ। वे महिला और उसके दूसरे पति को अपने गांव ले आए। पंचों ने सजा देने का तालिबानी फरमान सुनाया। इसके बाद महिला और दूसरे पति को रस्सियों से बांध दिया। लोग उन्हें 2 घंटे तक पीटते रहे। सास ने थप्पड़ मारे तो दूसरी महिला ने जमकर डंडे बरसाए। केलवाड़ा के माचड़ गांव का यह मामला 6 दिन पुराना है, लेकिन समाज व पंचों के डर से कोई कुछ नहीं बोल पाया। अब बेरहमी से पिटाई का वीडियो सामने आया तो

पीड़ित परिवार ने हिम्मत जुटाई और गोगुंदा थाने में पहले पति समेत 4 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। करीब एक महीने पहले महिला से दूसरी शादी करने वाले उदयपुर जिले के गोगुंदा के मारूवास निवासी पति ने बताया, हम दोनों एक-दूसरे को लंबे समय से जानते थे। शादी के बाद पत्नी के साथ मैं अपने घर में रह रहा था। इसी बीच 11 जनवरी को महिला का पूर्व पति तुलसी राम गमेती और समाज के कुछ दबंग मेरे घर आए। घर में तोड़फोड़ करते हुए हमें बंधक बनाकर पिकअप कार में डालकर केलवाड़ा के पास माचड़ गांव ले गए। गांव में पंचों को बुलाया तो उन्होंने बीच गांव में पिटाई करने की सजा सुना दी। पूर्व पति तुलसी राम और उसके रिश्तेदारों ने हमें घर के बाहर रस्सी से बांध दिया और पीटने लगे। 2 घंटे तक हमें डंडे से पीटते रहे। थप्पड़ और मुक्के मारते रहे। पंचों की मौजूदगी में हमें पीटा गया। जान से मारने की धमकी देते हुए सभी के सामने माफी मांगने के लिए कहा। एक महिला हम पर डंडे बरसाती रही। वहां मौजूद लोग पंचों और परिवार को पिटाई के लिए उकसाते रहे।

भीलवाड़ा तहसीलदार और दलाल गिरफ्तार, 17 लाख बरामद

एसीबी की बड़ी कार्रवाई

कार्यालय संवाददाता

भीलवाड़ा। जयपुर एसीबी ने बड़ी कार्रवाई करते हुए भीलवाड़ा शहर तहसीलदार लालाराम यादव के घर दबिश दी। कमला विहार स्थित उसके घर से 5 लाख रुपए समेत कई डॉक्यूमेंट बरामद किए। इस मामले में तहसीलदार के दलाल कैलाश धाकड़ के घर से भी 12 लाख

रुपए बरामद किए हैं। टीम ने तहसीलदार समेत तीन लोगों को गिरफ्तार भी किया है। तहसीलदार ने दलाल के माध्यम से रिश्वत का नेटवर्क तैयार कर रखा था। प्रारंभिक कार्रवाई में सामने आया कि लालाराम यादव जमीनी मामलों में रिश्वत लेकर लोगों को फायदा पहुंचाने काम करता था। हाल ही में लाला राम यादव ने एक जमीन के मामले में अपने परिजन के खाते में 3 लाख रुपए जमा करवाए थे। इसके बाद से तहसीलदार एसीबी के रडार पर था। सोमवार को डीजी बीएल सोनी व एडीजी दिनेश एमएन के नेतृत्व में तहसीलदार के घर पर दबिश दी गई। दबिश में पांच लाख रुपए और कई दस्तावेज बरामद हुए। एसीबी डीजी बीएल सोनी ने बताया कि तहसीलदार लालाराम यादव के खिलाफ एसीबी ने मामला दर्ज किया है। लाला राम यादव ने कुछ दिन पहले ही दीपक चौधरी नाम के एक व्यक्ति से 3 लाख रुपए की रिश्वत ली थी। मामला सामने आने के बाद एसीबी तहसीलदार पर लगातार नजर रख रही थी। इसके साथ ही इस पूरे प्रकरण में रिश्वत देने वाले दीपक चौधरी नामक व्यक्ति के आवास पर भी एसीबी की छापेमारी लगातार जारी है। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि लाला राम भीलवाड़ा से पहले बिजौलिया में तहसीलदार था। वहां अवैध माइनिंग करने वाले माफियाओं के साथ भी मिलीभगत के कई सामने सामने आए थे।

हवा में 20 मिनट से ज्यादा नहीं टिकता ओमिक्रॉन

छींकने-खांसने से निकले ड्रॉपलेट 6 फीट बाद कमजोर हो जाते हैं, इसलिए गांवों में कम संक्रमण

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन का वायरस 20 मिनट से ज्यादा हवा में नहीं टिक पाता है। यहीं कारण है कि जहां भीड़-भाड़ कम है, वहां इसका असर कम हो रहा है। एक्सपर्ट का कहना है कि किसी के छींकने या खांसने पर ड्रॉपलेट 3 से 4 फीट तक जाते हैं। इसके 5 से 6 फीट के बाद इसके ड्रॉपलेट कमजोर होकर खत्म हो जाते हैं।

इम्यूनोलॉजिस्ट और रेस्पिरेटरी डिजीज स्पेशलिस्ट डॉ. वीरेन्द्र सिंह ने बताया कि शहरों और महानगरों में कोविड संक्रमण तेजी से फैलता है। गांवों में इसका असर कम है। क्योंकि हवा में यह ज्यादा समय तक नहीं रह पाता। उनका कहना है कि किसी के छींकने या खांसने पर ड्रॉपलेट 3 से 4 फीट तक जाते हैं। इसके बाद 5 से 6 फीट के बाद इसके ड्रॉपलेट कमजोर होकर खत्म हो जाते हैं।

उन्होंने बताया कि बड़े शहरों में एक से दूसरी जगह जाने में ट्रैवल टाइम ज्यादा लगता है। उदाहरण के तौर पर दिल्ली में किसी व्यक्ति को 50 किलोमीटर ट्रैवल करने में डेढ़ घंटा तक लग जाता है। जयपुर में 20 से 30 मिनट समय सिटी में लगता है। राजस्थान के बाकी जिला मुख्यालयों पर 10-15 मिनट ही शहर में ट्रैवल के लगते हैं। इसलिए कोविड संक्रमित

बड़े जिलों में रफ्तार से फैल रहा कोरोना

कोरोना की तीसरी लहर में छोटे जिले और शहरों,आदिवासी इलाकों, गांवों-कस्बों में महानगरों और बड़े शहरों के मुकाबले संक्रमण काफी कम है। राजस्थान में 17 जनवरी तक कोरोना के कुल एक्टिव केस की संख्या 66742 रही। इसमें 6 बड़े शहर- जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर और हृष्टक्रमें आने वाले अलवर में एक्टिव केस 40622 हैं। ऐसे में यह 6 जिले ही बाकी प्रदेश के 27 जिलों पर संक्रमण के लिहाज से भारी हैं। छोटे शहरों वाले जिले- जालोर में 24, करौली में 123, बूंदी में 228, बारां में 454, टोंक में 460, झालवाड़ में 473, झुंझुनूं में 477 ही कोविड एक्टिव केस हैं। इसी तरह ग्रामीण इलाकों वाले क्षेत्रों में एक्टिव केस कम है।

जितनी देर तक शहर में ट्रैवल करता है, उतना ज्यादा संक्रमण का खतरा भी बढ़ता है। जबकि गांवों में जहां जनसंख्या कम है वहां संक्रमण फैलने की आशंका भी कम रहती है।

गांवों में कम फैल रहा संक्रमण

सूत्र बताते हैं कि संक्रमण गांवों की तुलना में शहरों में ज्यादा तेजी से फैल रहा है। 90 फीसदी से ज्यादा संक्रमण के मामले शहरी इलाकों में ही मिले हैं। कोविड के कारण अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों में भी शहरी मरीजों की संख्या ग्रामीण क्षेत्र के मरीजों से कई गुना ज्यादा देखने को मिल रही है। राजस्थान में गांवों-कस्बों और छोटे शहरों वाले जिलों में कोरोना का संक्रमण कम फैल रहा है, जबकि महानगरों-बड़े शहरों में ज्यादा संक्रमण फैलने का बड़ा कारण वहां दूसरे राज्यों या जिलों से लोगों की ज्यादा आवाजाही को माना जा रहा हैं।

दूसरी लहर ने गांवों में तबाही ला दी थी: कोरोना की दूसरी लहर ने गांवों में तबाही लाकर रख दी थी। थर्ड वेव ने एक बार फिर से चिंता बढ़ा दी है, लेकिन राहत की बात यह है कि ओमिक्रॉन वैरिएंट इस बार गांवों में कम असर दिखा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण वैरिएंट इस बार कमजोर है।

पूनियां के धरने में सामने आई बीजेपी की फूट

जयपुर। अलवर की मूक बधिर नाबालिग बच्ची पर यौन हमले के खिलाफ बीजेपी ने लगातार दूसरे दिन मंगलवार को प्रदेश में जगह-जगह धरने प्रदर्शन दिए। राजस्थान में बीजेपी की फूट एक बार फिर उजागर हो गई। पार्टी प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां के धरने में बीजेपी की फूट सामने आई. सतीश पूनियां ने मंगलवार को जवाहर नगर में अलवर की नाबालिग बच्ची पर यौन हमले के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया। जिसमें जयपुर शहर अध्यक्ष राघव शर्मा के अलावा कोई बड़ा चेहरा नजर नहीं आया। पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, अरूण चतुर्वेदी समेत कई प्रमुख बीजेपी नेता कार्यक्रम में नहीं पहुंचे। दमदार चेहरे और आवाज वाला कोई नेता नहीं पहुंचा। बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां पीड़ित बच्ची को न्याय दिलाने की मांग करते हुए सरकार के खिलाफ नारे लगाते नजर आए।

मंडल लेवल पर हुए धरना प्रदर्शन के तहत बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां ने जयपुर के जवाहर नगर और श्योपुर में कार्यकर्ताओं के साथ धरना दिया। पूनियां ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को गृहमंत्री के तौर पर फेल बताया। उन्होंने कहा दिल्ली के निर्भया कांड से भी ज्यादा अलवर की घटना वीभत्स है। जिससे राजस्थान शर्मसार हुआ है। आश्चर्य की बात यह है कि हफ्ते भर तक अपराधी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। जिस तरह पुलिस और सरकार ने अपने बयानों से यू-टर्न लिया।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**